SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 21 • ISSUE 09 • NOVEMBER 2022

हिन्दी मासिक

नवम्बर 2022

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

हमारा वतन एक संयुक्त परिवार के समान है

हमारा वतन एक संयुक्त परिवार है, जिसके समस्त वासियों पर उसकी उन्नति और सुधार की ज़िम्मेदारी है, यह केवल बहुसंख्यक का देश नहीं है, बहुसंख्यक के साथ तमाम अल्पसंख्यक भी पूर्ण अधिकार रखते हैं, देश के संयुक्त लाभ के लिए पारस्परिक सहयोग होना चाहिए, ये नहीं कि देश के फायदे को नज़रअन्दाज़ करके अपने वंश और समुदाय को प्रधान्ता दी जाये, इससे देश को सख़्त नुक़सान पहुँच सकता है। (हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह.)

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै० मुहम्मद राबे हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि
एक प्रति ₹ 30/-
वार्षिक ₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

नवम्बर 2022 वर्ष 21 अंक 09

नफ़रत की आग को बुझाइये

इस देश की नदियाँ पर्वत और देश के कण कण तक आपसे अनुरोध कर रहे हैं कि आप इंसानों का रक्तपात न कीजिए, नफ़रत के बीज मत बोइये, मासूम बच्चों को अनाथ होने से और महिलाओं को विधवा होने से बचाइये। भारत को जिन महान हस्तियों ने आज़ाद कराया था उन्होंने अहिंसा, सद्व्यवहार और जनतंत्र के पौधों की सुरक्षा का दायित्व हमें सौंपा था, और निर्देश दिया था कि इन पौधों को हाथ न लगाया जाय, किन्तु हम उनकी सुरक्षा में असफल रहे।

(हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
हमारा समाज कहाँ है?	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
ज़िन्दग़ी के बिगाड़ का सबब	हज़रत मौ0 सय्यद मुहम्म राबे हसनी नदवी	11
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	13
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	15
अच्छे व्यवहार की शिक्षा	मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी रह0	19
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	23
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	25
संवैधानिक मूल्य और इस्लाम धर्म	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	28
गुलज़ारी लाल नन्दा	प्रोफ़ेसर अतीक़ अहमद फ़ारूक़ी	32
चाँद का दो भागों में बँट जाना	इं0 जावेद इक़बाल	34
कुर्आन की अज़मत	शगुफ़्ता ज़ाकिर	36
तेतरा बना लेखक	हरि प्रसाद राय	39
वज़न कम करने के लिए खाएं	डॉ0 पूनम तिवारी	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू मोहम्मद आमिर नदवी	41
अपील बराए तामीर स्टॉफ क्वाटर्स	इदारा	42

क़ुअ्नि की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-तौबाः-

अनुवाद—

ऐ ईमान वालो! अपने आस पास के काफ़िरों से लड़ो और वे ज़रूर तुम्हारे अंदर मज़बूती पाएं और जान लो अल्लाह परहेज़गारों के साथ है[1](123) और जब भी कोई सूरह उतरती है तो उनमें कुछ वे हैं जो कहते हैं कि इसने तुममें किसके ईमान में बढ़ोत्तरी की, फिर रहे ईमान वाले तो उसने उनका ईमान बढ़ा दिया और वे ख़ुश होते हैं(124) और रहे वे लोग जिनके दिलों में रोग है तो उसने उनकी गंदगी में और गंदगी को बढ़ा दिया और वे कुफ़्र की हालत ही में मरे[2](125) क्या वे नहीं देखते कि हर साल वे एक बार या दो बार मुसीबत में पड़ते हैं फिर भी न तौबा करते हैं और न नसीहत प्राप्त करते हैं(126) और जब कोई सूरह उतरती है तो एक दूसरे को देखने लगते कि कोई (मुसलमान) देख तो नहीं रहा है फिर चल देते अल्लाह ने उनके दिल फेर दिये हैं, इसलिए कि वे नासमझ लोग हैं[3](127) बेशक तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैग़मबर आ चुके, तुम्हारी तकलीफ़ जिनको बहुत भारी पड़ती है तुम्हारी (भलाई) के बहुत इच्छुक हैं ईमान वालों के लिए बड़े करूणाशील बहुत मेहरबान हैं[4](128) फिर अगर वे मुँह फेरें तो कह दीजिए कि मुझे अल्लाह काफ़ी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया और वही महान अर्श का मालिक है[5](129)

सूर-ए-यूनुसः-

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालू है।

अलिफ लाम रॉ, यह हिकमत (तत्वदर्शिता) से भरी किताब की आयतें हैं[6](1) क्या लोगों को इस पर आश्चर्य है कि हमने उन्हीं में से एक व्यक्ति पर वह्य की कि लोगों को डराओ, और ईमान वालों को यह शुभ समाचार दे दो कि उनके पालनहार के यहां उनका सच्चा स्थान (मर्तबा) है, इनकार करने वाले बोले कि यह तो खुला जादूगर है[7](2) बेशक तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया[7] फिर वह अर्श पर विराजमान हुआ, वही हर काम की व्यवस्था करता है, उसकी अनुमति के बाद ही कोई सिफारिश कर सकता है। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है तो उसी की बन्दगी किया करो फिर भी तुम विचार नहीं करते[8](3) उसी की ओर तुम सबको लौटना है अल्लाह का वादा सच्चा है, बेशक उसी ने सृष्टि को पहली बार पैदा किया फिर वह उसे दोबारा पैदा कर देगा ताकि वह इन्साफ़ के साथ उन लोगों को बदला दे दे जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये और जिन्होंने इनकार किया उनके लिए उनके इनकार करने के बदले में खौलता पानी और दुखद अज़ाब है(4) वही है जिसने सूरज को चमक और चाँद को उजाला बनाया और उसके लिए मंजिलें निर्धारित कर दीं ताकि तुम वर्षों की संख्या और हिसाब जान लो[10] अल्लाह ने यह सब

ठीक–ठीक ही पैदा किया, वह ऐसे लोगों के लिए निशानियाँ खोलता है जो समझ रखते हैं(5) निश्चित रूप से रात व दिन के उलट फेर में और अल्लाह ने जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में पैदा किया उसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो डरते हैं[11](6)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. जिहाद फ़र्ज़-ए-किफ़ाया है, अगर शर्तें पूरी हों तो यह सिलसिला जारी रहना चाहिए और काफ़िरों का हमला हो जाए तो फिर सब पर जिहाद फ़र्ज़ (अनिवार्य) हो जाता है, और जिन पर हमला हुआ है अगर मुक़ाबिले की क्षमता न रखते हों तो आस-पास के मुसलमानों पर उनकी सहायता ज़रूरी है और जिहाद की तरतीब इस आयत से साफ़ ज़ाहिर होती है कि पहले चरण में दूर जाने की ज़रूरत नहीं जो दुश्मन क़रीब हैं उनसे मुक़ाबला किया जाए।

2. कोई सूरह उतरती है तो मुनाफ़िक़ लोग कहते हैं "इसमें है ही क्या इससे किस का ईमान बढ़ सकता है?" और ईमान वाले उससे फ़ायदा उठाते हैं और उनके ईमान में बढ़ोत्तरी होती है और टिप्पणी और इनकार करने वालों का निफ़ाक़ और बढ़ जाता है और फिर हिदायत की तौफ़ीक़ ही समाप्त हो जाती है और फिर साल में विभिन्न अवसरों पर उन पर जो मुसीबतें आती हैं उनसे भी नसीहत नहीं प्राप्त करते।

3. विशेष रूप से जब मुनाफ़िक़ों का उल्लेख होता है और उनकी वास्तविकता सामने आ जाती है तो उनके चेहरों का रंग बदल जाता है और वे नज़र बचा कर भागने का प्रयास करते हैं।

4. जिस चीज़ से तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है वह उन पर बहुत भारी है, हर संभव तरीक़े पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यही चाहते हैं कि उम्मत पर आसानी हो और वह हर प्रकार के अज़ाब से सुरक्षित रहे, उम्मत की ऐसी तड़प आपके दिल में है कि लोग दोज़ख़ की ओर भागते हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कमर पकड़ पकड़ कर उधर से हटाते हैं, जिहाद का मक़सद भी ख़ून बहाना नहीं बल्कि मजबूर हो कर सख़्त आपरेशन द्वारा मानव जाति के ख़राब अंगों को काट कर और ख़राब कीटाणुओं को नष्ट करके उम्मत के आम स्वभाव को स्वस्थ व संतुलित रखना है।

5. अगर आपकी इस महान करूणा और व्याकुलता का लोग आदर न करें तो परवाह नहीं, सारी दुनिया मुँह फेर ले तो अल्लाह आपके लिए काफ़ी है।

6. एक ओर तो सुदृढ़ व मोहकम है जिनमें परिवर्तन संभव नहीं दूसरी ओर पूरे तौर पर हिकमत हैं जिनसे हमेशा फ़ायदा उठाया जाएगा कोई दूसरी किताब इसके आदेशों को बदलने वाली नहीं।

7. यानी कुर्आन की वह्य को बहुत ही प्रभावशाली होने के कारण जादू कहने लगे।

8. चाहता तो क्षण भर में पैदा कर देता लेकिन अल्लाह की हिकमत यही चाहती थी।

9. यानी सृष्टि के सारे कामों की व्यवस्था उसी के हाथ में है कोई उसमें साझी तो क्या होता उसके दरबार में सिफ़ारिश भी उसकी अनुमति के बिना नहीं हो सकती।

10. महीनों और वर्षों का हिसाब चाँद और सूरज के उलट फेर से संबंधित है।

11. अल्लाह की शक्ति की महान निशानियाँ जब सामने आती हैं तो सच्चे दिल से सोचने वाले अल्लाह की हिदायत प्राप्त करते हैं।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

तीन दिन से ज़्यादा मुसलमानों से कट कर रहने पर रोकः—

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः किसी मुसलमान के लिए सही नहीं कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन रात से ज़्यादा कट कर रहे और मुलाकात के समय एक दूसरे से मुँह फेर ले, और उन दोनों में बेहतर वह है जो पहले सलाम कर ले। (मुस्लिम)

मुसलमानों को कष्ट देने और उनसे बद ज़ुबानी करने पर रोकः—

हज़रत जाबिर रज़ि0 फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि मुसलमान तो वह है जिसके हाथ और ज़ुबान से दूसरे मुसलमान सुरक्षित रहें।

(मुस्लिम)

अवज्ञा से बचने और एक दूसरे के कत्ल पर रोकः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने आखिरी हज में फरमाया था— तुम्हारा भला हो, मेरे बाद काफिर मत हो जाना कि आपस में एक दूसरे की गर्दन मारने लगो। (मुस्लिम)

मुसलमान को गाली देना फिस्क (ईश्वरीय अवज्ञा) हैः—

हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि मुसलमान को गाली देना फिस्क (ईश्वरीय अवज्ञा) और उसको क़त्ल करना कुफ़्र (नास्तिकता) है।

(मुस्लिम)

एक दूसरे के माल को बिना अधिकार लेना हरामः—

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— जिसने किसी मुसलमान का हक़ क़सम खा कर छीना, अल्लाह तआला ने उसके लिए जहन्नम में दाख़िला जरूरी कर दिया, और जन्नत को उस पर हराम कर दिया। एक आदमी ने पूछा— ऐ अल्लाह के नबी! चाहे वह थोड़ी ही चीज़ हो? आप सल्ल0 ने फरमाया—चाहे वह पीलू (के पेड़) की टेहनी ही क्यों न हो। (मुस्लिम)

इस कदर मुसलमान सम्मान योग्य हैः—

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— जिसने अपने भाई की तरफ किसी लोहे (धारदार चीज़) से इशारा किया, फरिश्ते उस समय तक उस पर लअ़नत (धिक्कार) करते रहते हैं जब तक कि वह उसको छोड़ न दे, चाहे वह (जिसकी ओर इशारा कर रहा है) माँ—बाप के सम्बन्ध से उसका भाई ही क्यों न हो।

(मुस्लिम)

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— अकारण मुसलमान की इ़ज्जत व आबरू पर जुबान चलाना बदतरीन जुल्म है।

(अबू दाऊद)

ग़ीबत (चुगली) करने पर सख़्त सज़ाः—

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 कहते हैं कि अल्लाह के नबी सल्ल0 ने फरमाया— जब अल्लाह तआला

ने मेरी मेराज (आसमानी दुनिया की सैर) कराई तो मैं ऐसे लोगों के पास से गुज़रा जिनके नाखून पीतल के थे, उनसे वो अपने सीनों (छातियों) और चेहरों को नोच रहे थे, मैंने हज़रत जिब्रईल से पूछाः ये कौन लोग हैं? उन्होंने बताया कि ये वो हैं जो लोगों का गोश्त खाते थे (चुगली करते थे) और उनकी इज़्जत व आबरू को ठेस पहुँचाते थे। (अबू दाऊद)

मुनाफिकों (कपटाचारियों) के लिए चेतावनीः–

हज़रत अबू बरज़ः असलमी रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– ऐ सिर्फ ज़ुबान से ईमान लाने वालो और दिल से यकीन न करने वालो! मुसलमानों की गीबत (चुगली) न करो और न उनकी इज़्ज़त सम्मान के पीछे पड़ो, जो उनकी इज़्ज़त के पीछे पड़ेगा उसकी इज़्ज़त के पीछे अल्लाह पड़ेगा, और अल्लाह जिस आदमी की इज़्ज़त के पीछे पड़ेगा उसको उसके घर में रुस्वा (तिरस्कृत) कर देगा।

(अबू दाऊद)

मुसलमान को मुनाफिक़ से बचाने वाले पर अल्लाह की कृपाः–

हज़रत मुआज़ बिन अनस अल–जुहनी रज़ि0 अपने पिता से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– जिस आदमी ने किसी ईमान वाले को मुनाफिक से बचाया, मुझे याद पड़ता है कि आप सल्ल0 ने फरमाया तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन एक फरिश्ता भेजेगा जो उसके गोश्त (जिस्म) को जहन्नम की आग से बचाएगा, और जो आदमी किसी मुसलमान की इज़्ज़त पर हमला करेगा ताकि अपने इस कुकर्म से उसमें ऐब लगा दे, तो अल्लाह तआला उसको जहन्नम के पुल पर रोक लेगा जब तक कि उसने जो बुहतान (मिथ्यारोप) लगाया है उसका तावान (मुआवजा) दे कर छुटकारा न हासिल कर ले।

(अबू दाऊद)

कुछ मौकों पर मोमिन की मदद और बचाव ज़रूरी हो जाता हैः–

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह और तल्हा बिन सहल अन्सारी रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– जो भी आदमी किसी मुसलमान को ऐसी जगह बेसहारा छोड़ देगा जहां उसका अपमान किया जा रहा हो और उसकी इज़्ज़त को कलंकित किया जा रहा हो तो अल्लाह तआला उस आदमी को ऐसी जगह बेसहारा छोड़ देगा जहाँ उसे उसकी मदद की ज़रूरत होगी, और जो भी आदमी किसी मुसलमान की ऐसी जगह मदद करेगा जहाँ उसकी बेइज़्ज़ती की जा रही है तो अल्लाह तआला भी उसकी मदद ऐसी जगह फरमाएगा जहाँ उसकी मदद की उस बन्दे को ज़रूरत होगी।

मोमिन की बड़ाईः–

हज़रत नाफ़ेअ़ रह0 बयान करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 ने अल्लाह के घर की ओर अथवा यह फरमाया कि काबा शरीफ़ की ओर देखा और फरमाया– तुम्हारी क्या बड़ाई है, और तुम्हारा सम्मान कितना बढ़ा हुआ है? ईमान वाला अल्लाह के नज़दीक तुम से ज़्यादा सम्मान योग्य है। (तिर्मिज़ी)

❖❖❖

यह दौर अपने ब्राहीम की तलाश में है,
सनम कदः है जहाँ,
ला इलाह इल्लल्लाह

सम्पादकीय

हमारा समाज कहाँ है?

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

वर्तमान काल जिसमें हम और आप ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं उसे उन्नति और विकास का ज़माना कहा जाता है, इस विकास और उन्नति को समझने और बताने के लिए अंग्रेज़ी भाषा के दो शब्दों का प्रयोग बहुत ज़ियादा हो रहा है एक 'डिजिटल' दूसरा ''सोशल नेटवर्किंग'', निःसंदेह वर्तमान काल की तुलना जब हम भूतकाल से करते हैं तो यह कहना पड़ता है कि पहले इन्सान चलता था अब वह दौड़ता है, बैंक और रेलवे दो विभाग ऐसे हैं जिसमें घण्टों लाइन लगाना पड़ता था इसके साथ साथ गिरह कटी का भी रिस्क लेना पड़ता था, अब ये सारे काम बिना रिस्क लिए घर बैठ कर हो रहे हैं, 1962 ई0 में अपने विद्यार्थी जीवन की बात याद आ रही है कि मेरा एक साथी मु0 फ़ारूक़ जो जोहान्सबर्ग स0 अफ़्रीका का रहने वाला था, उसे टाइफाइड बुख़ार हुआ और बलरामपुर हास्पिटल में उसका इन्तिक़ाल हो गया, उसके वालिद और घर वालों से संपर्क करने में कई घण्टे लग गए, उदाहरण के तौर पर हमने आपके सामने ये बातें रखीं। इस समय एक बड़ा और महत्वपूर्ण प्रश्न है क्या इस भौतिक एवं आधुनिक उन्नति और विकास के साथ हम एक अच्छे और आईडियल इन्सान बन सके? हमारी मानवता बाक़ी रही या समाप्त हो गई, हम मानव के बजाए दानव तो नहीं हो गए? संसार के पालनहार और उसके स्वामी ने हमें धरती पर इन्सान के रूप में भेजा, पशु के रूप में नहीं भेजा, जंगल के फाड़ खाने वाले जानवर और डसने वाले साँप और नाग के रूप में नहीं भेजा, जब हम अपने समाज को मानवता और नैतिकता, सभ्यता और ईमानदारी के दृष्टिकोण से देखते हैं तो साफ़ नज़र आता है कि हम बहुत तेज़ी से पतन की ओर जा रहे हैं, और मानवता के स्तर से गिरते जा रहे हैं, यह हमारा काल्पनिक विचार नहीं है, बल्कि प्रतिदिन समाचार पत्रों की ख़बरें और शीर्षक हैं जो इसके साक्षी हैं, दैनिक ख़बरों का अगर जायज़ा लें तो तीन प्रकार की ख़बरें प्रमुख होंगी–

औरतों की इज़्ज़त पर आक्रमण और उनका अपमान इस विषय से संबन्धित जब हमने दो दिन के अख़बार का जायज़ा लिया तो निम्नलिखित हेडिंग हमारी नज़र से गुज़रीं:–

किशोरी से सामूहिक दुष्कर्म, टाफ़ी देने के बहाने, बच्ची से बलात्कार, दुष्कर्म व हत्या के आरोपी को उम्र क़ैद, सिर फिरे ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट की युवती की अश्लील फोटू, छात्रा से छेड़ छाड़ और धमकी देने वाला किशोरी से दुष्कर्म कर, बनाया वीडियो, नाबालिग़ को भगा कर की शादी, प्रेम त्रिकोण में रेप के बाद की गई थी युवती की हत्या, विवाहिता को जबरन शराब पिला कर दुष्कर्म, कक्षा तीन की छात्रा को प्रधानाचार्य ने दिखाया अश्लील वीडियो, यह केवल दो दिन की ख़बरें हैं जिन्हें पढ़ कर आसानी से अन्दाज़ा कर सकते हैं कि हम नैतिकता के किस स्तर पर हैं, क्या हमारे समाज में नारी सुरक्षित है? इस सूरते हाल को कैसे बदला जाए, इस पर ग़ौर करना प्रत्येक शिक्षित और सभ्य देशवासी और

नागरिक का कर्तव्य है।

दूसरी बुराई जो समाज को तबाही के कगार पर पहुँचा रही है वह शराब नोशी अर्थात मद्यपान है, इसके दुष्परिणामों को दैनिक समाचार पत्रों द्वारा आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैंः–

शराब के लिए रूपये नहीं दिए तो बुजुर्ग को गला दबा कर मार डाला, शराब के नशे में बड़े भाई की पीट पीट कर हत्या, यह केवल दो उदाहरण हैं, सैकड़ों परिवार और घराने शराब की वजह से ग़रीबी और दरिद्रता का शिकार हो रहे हैं, इस खुली तबाही और बरबादी के बावजूद प्रति दिन नई–नई शराब की दुकानें खुलती जा रही हैं, आज से चौदह सौ साल पहले मानवता के सबसे बड़े उपकारी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शराब को ''उम्मुल ख़बाएस'' तमाम बुराईयों की जड़ फ़रमाया था, अगर दुनिया के विद्वान नबी–ए–बरहक़ हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के केवल इसी आदेश पर ध्यान देदें तो बड़ी हद तक बुराईयों पर कन्ट्रोल हो सकता है। इस समय समाज में प्रमुख बुराई जो हर स्तर पर नज़र आ रही है वह धोखा धड़ी और जालसाज़ी से करोड़ों की रक़में हड़प करना और बैंकों के एकाउण्ट से ग़ायब करना, चूँकि समाज का हर वर्ग इसमें शरीक है इसलिए, अपराधी न सामने आता है और न पकड़ा जाता है इसके साक्ष्य के लिए किसी भी दिन आप समाचार पत्र देख सकते हैं, कुछ उदाहरण, सेवा में प्रस्तुत हैंः–

अख़बारी सुरखियाँः–

सरकारी नौकरी लगाने का झाँसा देकर, दरोग़ा ने हड़पे 21 लाख रूपये, ज़मीन दिलाने का झाँसा दे कर महिला से हड़पे 58 लाख, बैंक में नौकरी के नाम पर ठगे 11 लाख रूपये जालसाज़ों ने थमा दिया फ़र्ज़ी नियुक्ति पत्र, बैंक में बुला कर करवाया इंटरव्यू, होलैंण्ड कम्पनी ने हड़पे 57.70 लाख, रविकिशन के साथ सवा तीन करोड़ की धोखा धड़ी, करोड़ों की जालसाज़ी के दो आरोपी गिरफ़्तार, ऊपर लिखित अपराध ऐसे हैं जो पहले भी किसी ज़माने में पाये जाते थे, परन्तु अब और तब में अन्तर यह है कि पहले अपराध की संख्या और मात्रा कम थी पहले इन्सान समाज और ईश्वर से डरता था, अब इन्सान ढीट और जरी हो गया है, दूसरे यह कि क़ानून भी अपना पूरा काम नहीं करता है, क़ानून की नज़र में सबको समानता मिलनी चाहिए, क़ानून दुर्बल और शक्तिशाली में भेदभाव नहीं करता। परन्तु इस समय हम जाति और धर्म के स्तर से इन्सानों को देखने लगे हैं जिसकी वजह से समाज की शान्ति भंग हो रही है, इन्सान स्वार्थी बनता जा रहा है, नारी से सम्बन्धित जो अश्लील घटनाएं बहुत अधिक हो रही हैं उसमें हमारे इलेक्ट्रानिक और प्रिन्टि मीडिया का बड़ा दख़ल है यदि इस पर कन्ट्रोल मुम्किन हो तो ज़रूर किया जाए, इस समय मोबाइल हमारे नौजवान बच्चों और बच्चियों में बहुत बिगाड़ पैदा कर रहा है, मोबाइल इस समय आवश्यकता से ज़्यादा फ़ैशन बनता जा रहा है, इस समय बिगड़े हुए माहौल में सुधार की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी मुस्लिम क़ौम पर है, जिसको अल्लाह की किताब ''कुरआन मजीद'' ने ''ख़ैर उम्मत'' बेहतरीन उम्मत से सम्बोधित किया है, अल्लाह तआला फ़रमाता है–

''तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा की गई है, तुम भलाई का आदेश देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो''

(आले इमरान–110)

शेष पृष्ठ..12...पर

ज़िन्दगी के बिगाड़ का सबब, अल्लाह के डर का अभाव

हज़रत मौ0 सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

दुनिया की तारीख़ यह बताती है कि अगर संसार के स्वामी अल्लाह का डर न हो तो इन्सान अपने मन का बन्दा, और ज़िन्दगी के हर काम को केवल अपने सांसारिक फ़ाइदे की पृष्टिभूमि में देखने वाला बन जाता है, और यह बात किसी समय इतनी बढ़ जाती है कि उसकी वजह से दूसरों के साथ अन्याय और अत्याचार करने से रुकता नहीं, यह बात क़ौमों की ज़िन्दगी में भी पाई जाती है और व्यक्तिगत ज़िन्दगी में भी विशेष रूप से देखी जा सकती है। मानव इतिहास में वह ज़माना जो अल्लाह के डर और आख़िरत (प्रलोक) की फ़िक्र से ख़ाली गुज़रा है उसमें जुल्म और ज़ियादती की बहुत अफसोसनाक घटनायें घटी हैं, कुरआन मजीद में ऐसे ज़माने और ऐसे समाज का वर्णन हुआ है, वहाँ उनके ज़ालिमाना रवय्ये को स्पष्ट किया गया है और उनके बिगाड़ के उल्लेख के साथ उसकी बुन्यादी वजह एक अल्लाह की ताबेदारी से उनका विरोध बताया गया है। मिस्र के फ़िरऔन ने अपने इन्तिक़ाल करने वाले बादशाहों के पहाड़ जैसे मक़बरे बनाने के लिए अपनी जनता से किस क़दर ज़ालिमाना तरीक़े से बेगार लिया और उसके आधार पर जुल्म ज़ियादती द्वारा अपनी महानता के चिन्ह स्थापित करने की मिसालें पेश कीं, फिर अपने सांसारिक लाभ के लिए अपनी अधीन अल्पसंख्यक क़ौम बनी इस्राईल की शरीफ़ लड़कियों को अपना दासी बनाया ताकि उनसे निर्लज्जता के साथ सेवा लें और फ़ाइदा उठाएं और उनके बच्चों संग साधारणताः नरसंहार का तरीक़ा अपनाया ताकि वह बड़े हो कर मुक़ाबले पर न आ सकें, कुरआन मजीद इसका ज़िक्र इस तरह करता हैः—

"उनके लड़कों को ज़बह करता था और लड़कियों को ज़िन्दा रखता था" दूसरी ओर क़ौमें आद, समूद और अमालिक़ा अपनी ताक़त और ज़ोर ज़बरदस्ती का प्रदर्शन करते फिरते थे, जिसको कुरआन मजीद में यूँ बयान किया गया हैः— ***"कि हर जगह पर तुम कोई वैभवशाली स्मारक का निर्माण करते हो और जिस किसी पर तुम ताक़त का इस्तेमाल करते हो तो महा शक्तिवान बन कर और बल पूर्वक बनकर ताक़त का इस्तेमाल करते हो"***। कुरआन मजीद ने उन क़ौमों का ज़िक्र सम्भवता इसलिए किया कि यह आइन्दा आने वाले लोग समझें कि आइन्दा भी एक अल्लाह का विरोध और आख़िरत को भूलने वाली क़ौमों का भी यही तरीक़ा बन सकता है, लिहाज़ा लोग इसको समझें और अपने को बातिल पसन्दी और इच्छा शक्ति से हटा कर एक अल्लाह के नियुक्त किये हुए सीधे रास्ते पर चलें, अन्यथा अल्लाह के अज़ाब के शिकार होंगे।

कुरआन मजीद में क़ौमों के साथ—साथ अफ़राद में इस तरह के रवय्ये की मिसालें भी बयान की गई हैं जो ज़ियादा तर बनी इस्राईल के अफ़राद की हैं जब उनका शुरु का अच्छा

ज़माना गुज़र जाने के बाद उनके बहुत से लोग इच्छा भक्ति और दुनिया तलबी में ग्रस्त होने लगे, विश्वासघाती, स्वार्थपरता, अन्याय के अपराधी हुए, कुरआन मजीद में यह सब बातें मात्र इतिहास बताने के लिए नहीं दी गईं, बल्कि यह इसलिए बयान की गईं कि आने वाली क़ौमें और उनके अफ़राद सबक़ लें और अपनी ज़िन्दगियों को सही रुख़ दें और वह सही रुख़ पर परवरदिगारे आलम की नाराज़गी के डर और आख़िरत में जज़ा व सज़ा की कल्पना से जुड़ा हुआ है।

कुरआन मजीद में साफ़ साफ़ बताया गया है कि जब इन्सानी समाज में ख़राबियाँ बहुत फैल जाती हैं और भयानक हद तक पहुँच जाती हैं तो पूरा समाज अल्लाह के क्रोध का शिकार होता है और बाज़ वक़्त उसका प्रभाव पूरे समाज की तबाही की शक़्ल में ज़ाहिर होता है लेकिन अफ़सोस की बात है कि इन्सान प्रायः अपनी ताक़त व दौलत के नशे में इन वास्तविकताओं से आँखें बन्द कर लेता है जिसका बुरा परिणाम उसको बाद में झेलना पड़ता है।

कुरआन मजीद में बहुत से वाक़िआत इसी सिलसिले के बयान किये हैं और उनका उद्देश्य एक अल्लाह पर ईमान रखने वालों को ध्यान दिलाना है।

वर्तमान काल में मानव समाज में यह समस्त बुराईयाँ फैली हैं जो पिछली क़ौमों में पाई जाती थीं उन बुराईयों का कुरआन मजीद ने विस्तार पूर्वक वर्णन किया है, उन बुराईयों में राज सत्ता की ओर से अपने अधीनों को दबाना और उनकी उपेक्षा करना, उन पर अत्याचार करना, इसी प्रकार समाज के ऊँचे लोग अपनी महानता और प्रतिष्ठा के प्रदर्शन के लिए दुर्बलों को कुचल देते हैं। अल्लाह को गौरव और घमण्ड पसन्द नहीं, यह वह बुराईयाँ हैं जिनके परिणाम स्वरूप क़ौमें और लोग तबाह हो गये और मिट गए, इतिहास इन तबाहियों और बुराईयों का गवाह है।

हालात को सुधारने के लिए ज़रूरी है कि लोगों के दिलों में अल्लाह का ख़ौफ़ और आख़िरत की फ़िक्र पैदा की जाए, आपस में मेल महब्बत का माहौल बनाया जाए, ताकि देश और देश वासियों में भाई चारा हो, और शान्ति स्थापित हो।

❖❖❖

पृष्ठ..10.. का शेष ...

एक ओर मुसलमानों की प्रशंसा भी है, दूसरी ओर उनके कांधों पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी भी है, यदि वह इस ज़िम्मेदारी को नहीं निभाएंगे तो अल्लाह के सामने जवाबदेह होंगे।

मुसलमान जिस नबी की उम्मत में हैं मानव इतिहास में उस नबी का परिचय ''मुहसिने आलम'' विश्व उपकारी की उपाधि से है, मुसलमानों को अपने नबी की इस प्रमुख विशेषता को नहीं भूलना चाहिए, हर अवसर पर उनको समाज के सामने उपकारी के रूप में आना चाहिए अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने बुराई उन्मूलन की तीन श्रेणियाँ नियुक्त की हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया– तुम में जो व्यक्ति बुराई देखे, यदि उसके सामर्थ्य न हो तो उस बुराई को हाथ से मिटा दे, यदि इसका सामर्थ्य न हो तो ज़बान का प्रयोग करे और अगर इसका भी सामर्थ्य न हो तो दिल से बुराई को बुराई समझे, आपने फ़रमाया यह ईमान का कमतर दर्जा है, मुसलमान के लिए उचित नहीं कि वह समाज में बुराई देखे और खामोश रहे।

❖❖❖

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

अल्लाह के सामने सिफ़ारिश का मतलबः—

अल्लाह के यहां ऐसा नहीं है कि जैसे कोई बादशाह न चाहते हुए भी सिफ़ारिश कुबूल करता है, बीवी का दबाव होता है, बच्चों का होता है, खास खास दोस्तों का होता है, बादशाह न चाहते हुए भी उन की सिफारिश तस्लीम करता है, अल्लाह की ज़ात इससे बहुत बलन्द है, हाँ इसकी मिसाल इस तरह दी जा सकती है कि किसी ने कोई जुर्म किया, बादशाह खुद भी चाहता है कि माफ कर दे लेकिन वो अपने खास लोगों से उनका दर्जा बढ़ाने के लिए या किसी मस्लेहत से सिफारिश कराता है फिर सिफारिश कुबूल करता है और माफ करता है, अल्लाह ताला भी अपने जिन बंदों को बख्शना चाहेगा उनकी सिफारिश करवाएगा और सिफारिश का ये दरवाजा सबसे बढ़ कर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए खुलेगा और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सारे इंसानो की सिफारिश उस वक़्त फरमाएंगे जब जन्नत और दोजख़ का फैसला हो चुका होगा और जन्नत वाले जन्नत में जाने के इंतेजार में होंगे और इजाजत का इंतेजार होगा तो वो एक एक नबी के पास जाएंगे, सब ही उज्र करेंगे आखिर में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आएंगे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सिफारिश से सब जन्नत वाले जन्नत में दाखिल किये जाएंगे, ये ''शिफाअत—ए—कुबरा'' (सब से बड़ी सिफारिश) कहलाती है।

मालूम हुआ कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है, न रोजी देना किसी के इख़्तियार में है न पानी बरसाना, न औलाद देना, न नफा व नुक़्सान पहुँचाना, और ये जो कुछ लोग नबियों, बुजुर्गों के लिए ये ख़याल रखते हैं कि उनको कुदरत तो है मगर वो अल्लाह के सामने अपनी कुदरत को ज़ाहिर नहीं करते और इसको अदब के ख़िलाफ़ समझते हैं, अगर चाहें तो एक पल में उलट पलट कर दें, अदब की हद को देखते हुए ऐसा नहीं करते ये सब मुशरिकों वाले ख़यालात हैं, अल्लाह फरमाता हैः—

अनुवादः ***और अल्लाह के अलावा वो ऐसों को पूजते हैं जो आसमानों और ज़मीन में उनकी रोज़ी के कुछ भी मालिक नहीं और न वो उनके बस में है। (अल—नह्लः 73)***

एक जगह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वास्ते से पूरी उम्मत से कहा जा रहा हैः—

अनुवादः ***और अल्लाह के अलावा किसी ऐसे को मत पुकारना जो तुम्हें नफा न पहुँचा सके न नुक़्सान पहुँचा सके बस अगर आपने ऐसा किया तो जरूर आप ना इंसाफ़ों में से हो जाएंगे। (यूनुसः 106)***

ऐसे कादिरे मुतलक (सर्वशक्तिमान) ज़बरदस्त जात के होते हुए किसी और को पुकारना कैसी ना इंसाफी और बेवकूफी है। पीराने पीर शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०) इसको मिसाल से बड़ी अच्छी तरह समझाया है और जो लोग मुसीबतों को दूर करने या किसी तरह का नफा हासिल करने के लिए गैरुल्लाह का सहारा लेते हैं उनकी मूर्खता और बेवकूफी का नक़्शा खींच दिया है, वो फरमाते हैंः—

''सारी मख़लूक़ को एक

ऐसा आदमी समझो जिसके हाथ एक बहुत बड़े और विशाल साम्राज्य के राजा ने जिसका शासन महान है, उसका वर्चस्व और ताक़त अनुमान से बाहर है, बाँध दिए हों, फिर उस राजा ने उस आदमी के गले में फंदा डाल दिया है, और उसके पैर भी बाँध दिए, उसके बाद सनोबर के एक ऐसे पेड़ पर लटका दिया है जो ऐसी नदी के किनारे है जिसकी लहरे जबर्दस्त, चौड़ाई बहुत, गहराई बे पनाह, जिसका बहाओ बहुत ही तेज है, उसके बाद बादशाह खुद एक ऐसी कुर्सी पर बैठा है जो बड़ी शानदार और बहुत बलन्द है, इतनी कि उस तक पहुँचने का इरादा करना और पहुंचना असम्भव है, उस बादशाह ने अपने पहलु में तीरों, नेजों, बर्छियों, भालों और दूसरे क़िस्म क़िस्म के हथियारों और औजारों का इतना बड़ा भंडार रख लिया है कि उसकी मात्रा का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। अब जो शख्स इस मंजर को देखे क्या उसके लिए ये मुनासिब है कि राजा की तरफ देखने के बजाए, उस से डरने और उम्मीद लगाने के बजाए उस सूली पर लटके हुए शख़्स से डरे और उससे उम्मीद लगाए, जो शख़्स ऐसा करे क्या वो हर बुद्धि रखने वाले के नज़दीक बे अक़्ल, पागल और इंसान के बजाए जानवर कहलाने का हकदार नहीं?

(फुतूहल गैब, सत्रहवाँ अध्याय)

एक जगह अल्लाह ताला इरशाद फरमात हैः—

अनुवादः— *"कह दीजिए कि अल्लाह के अलावा तुम जिसका दावा करते हो उसको पुकारो, वो आसमानों और जमीनों में जर्रा बराबर किसी चीज के मालिक नहीं और न उनका इन दोनों में कोई साझा है और न इन दोनों में उसका कोई मददगार है। और उसके पास उसी की सिफारिश काम आएगी जिसके लिए उसने इजाजत दी हो, यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाती है तो वो कहते हैं कि तुम्हारे रब ने क्या कहा, वो जवाब देते हैं कि सच ही कहा और वो बलन्द है बड़ा है।"*

(सूरः सबा 22-23)

एक हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास को ख़िताब कर के तौहीद की हक़ीक़त को बयान फरमाया और इस बात को साफ़ कर दिया कि किसी को इख़्तियार नहीं कि किसी को बिना अल्लाह के हुक्म के नफा व नुक़्सान पहुंचा सके, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः—

अनुवादः— *ऐ बच्चे! अल्लाह को याद रखो अल्लाह तुम्हें याद रखेगा, अल्लाह को याद रखो तुम उसको अपने सामने पाओगे, जब कुछ मांगो तो अल्लाह ही से मांगो, और जब मदद चाहो तो अल्लाह ही से मदद चाहो और जान लो कि अगर पूरी उम्मत इस बात पर एक हो जाए कि तुम्हें कुछ फायदा पहुंचा दे तो उतना ही फायदा पहुंचा सकती है जितना अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है और अगर पूरी उम्मत इस बात पर एक हो जाए कि तुम्हें कुछ नुकसान पहुँचा दे तो उतना ही नुकसान पहुँचा सकती है जितना अल्लाह ने लिख दिया है, कलम उठा लिए गए और सहीफे सूख गए।*

(सुनन तिर्मिजी 2516)

इस हदीस में बहुत साफ़ साफ़ ये बात बता दी गई कि नफ़ा नुक़्सान का अधिकार किसी को नहीं, ये सब कुदरत अल्लाह के पास है, वो जो चाहे करे।

इन आयतों और हदीसों से ये बात खुल कर सामने आ गई कि सब इख़्तियार और तसर्रुफ़ अल्लाह ही के हाथ में है, ये

शेष पृष्ठ..18...पर

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

क्या महमूद ग़ज़नवी में उदारता न थीः–

हमारा दुर्भाग्य रहा है कि हम लड़ाई–झगड़े का इतिहास तो बहुत रुचि से पढ़ते हैं लेकिन ऐसी घटनाओं की अनदेखी कर देते हैं जिनसे आपसी लगाव और सद्भाव का सबक़ मिल सकता है। महमूद ग़ज़नवी ने सोमनाथ को जिस तरह बर्बाद किया, उसकी कहानी तो बहुत दोहरायी जाती है। लेकिन उसी का जीवन वृत्तान्त यह भी है कि जब उसने मथुरा का मन्दिर देखा तो उसकी भव्यता और शान देख कर चकित रह गया।

अपने एक पत्र में लिखता है कि अगर कोई ऐसा भवन बनाना चाहे तो लाखों लाख दीनार ख़र्च करके भी नहीं बना सकता है और संभवतः 200 वर्ष में भी ऐसा भवन न बन सके। यहाँ वह न मूर्ति तोड़ने वाला बना और न मूर्ति देखने वाला बल्कि उस मन्दिर के सौन्दर्य और शान से प्रभावित रहा। इसका कोई उदाहरण नहीं कि उसने शान्ति की स्थिति में किसी मन्दिर को गिराया या उसने किसी हिन्दू को धर्म छोड़ने पर विवश किया, बल्कि ग़ज़ना में तो उसने हिन्दुओं के रहने के लिए एक मुहल्ला भी आबाद कर दिया था। जवामेउल हिक़ायात और लवामेउर रिवायत में है कि अमीर नस्र जो खुरासान का शासक था और महमूद का चहेता भाई था, एक बार वह सुल्तान के पास ठहरा हुआ था। उसके जीनखाने से एक जड़ाऊ लगाम चोरी हो गयी, चोरी पकड़ी गयी तो चोर एक मामूली स्तर का नौकर था जो हिन्दू था। अमीर ने आदेश दिया कि उसको बाँध कर बीस कोड़े लगाए जाएँ। सुल्तान को यह मालूम हुआ तो उसको बहुत दुख हुआ। उसने अमीर नस्र को कहलवा भेजा कि हमारी मौजूदगी में हमारे नौकरों को कोड़े से पिटवाते हो और हमारी नाराज़गी की परवाह नहीं करते। इसके बाद एक महीने तक उसको अपने सामने आने की अनुमति नहीं दी। कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर सुनिति कुमार चटर्जी का शोध है कि महमूद के सिक्कों पर संस्कृत के शब्द पाये जाते हैं, उसके सिक्कों पर एक तरफ़ तो कलिमा ''ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' है और दूसरी तरफ़ संस्कृत में इसका अनुवाद ''आदि उम्तम एकम मुहम्मद अवतार'' है। यह सही अनुवाद तो नहीं, इसलिए कि मुसलमान मुहम्मद सल्ल0 को अवतार नहीं मानते। वह आपको इंसान ही समझते हैं। प्रोफेसर सुनिति कुमार चटर्जी इस सम्बन्ध में यह भी लिखते हैं कि महमूद ग़ज़नवी का अपने सिक्कों पर संस्कृत लिखवाना उसकी राजनैतिक बुद्धिमानी का प्रमाण है। जब पंजाब उसकी सल्तनत का अंग हो गया तो उसने यहाँ की हिन्दू आबादी को अपनी ओर इस तरह आकर्षित करना चाहा, यह उसकी ऊँची मानसिकता और उदारता का प्रमाण था।

सुल्तान महमूद का हिन्दुओं को अपनी तरफ़ आकर्षित करना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं क्योंकि न केवल उसके ग़ज़ना

और पंजाब के क्षेत्र में हिन्दू आबाद थे बल्कि उसकी सेना में हिन्दू सरदार और सैनिक भी थे। वह तख्रिस्तान से बढ़ कर, बल्ख़, एलक ख़ान से युद्ध लड़ने के लिए गया तो उसकी सेना में तुर्कियों, ख़िलजियों और ग़ज़नवियों के साथ हिन्दू सैनिक भी थे।

वर्तमान काल में कुछ खुली सोच वाले और उदार हिन्दू इतिहासकारों ने हिन्दुओं के साथ सुल्तान महमूद के सद्भाव को अच्छी तरह स्वीकार किया है। उदाहरण के लिए ईश्वर टोपा ने लिखा है कि वर्तमान काल के एक इतिहासकार का विचार है जो महमूद ग़ज़नवी का आलोचक भी है कि वह कोई इस्लाम का प्रचारक नहीं था। ग़ैर मुस्लिमों को मुसलमान बनाना उसका उद्देश्य नहीं रहा। अलफ़िन्स्टन ने हमको विश्वास के साथ बताया है कि सुल्तान गुज़रात में लम्बे समय तक रहा, लाहौर में भी वह ठहरा रहा। लेकिन उसने किसी ग़ैर–मुस्लिम को मुसलमान नहीं बनाया। उसने हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की चिन्ता ही नहीं की। उसकी धार्मिक नीति में निष्पक्षता की विशेषता थी। उसके बारे में कहीं यह उल्लेख नहीं आता कि उसने किसी हिन्दू को अपना धर्म छोड़ने पर विवश किया हो। उसने किसी भी व्यक्ति को उसकी व्यक्तिगत अन्तरात्मा के आधार पर मृत्युदण्ड नहीं दिया। उसने युद्ध या घेराबन्दी के अवसर पर तो हिन्दुओं की हत्या की लेकिन किसी और अवसर पर उसके द्वारा हिन्दुओं की हत्या करने का उल्लेख नहीं पाया जाता है। उसके शासनकाल में हिन्दुओं को पूरी धार्मिक स्वतन्त्रता रही। उनकी नियुक्ति न केवल व्यवस्था सम्बन्धी मामलों के लिए की जाती बल्कि वह सेना में भी भर्ती किये जाते। उनके धर्म पर कोई आपत्ति नहीं की जाती। जिस तरह सेना में अरब, अफ़ग़ान, दैलमी, खुरासानी और ग़ौरी होते, वह भी होते। हिन्दू सैनिक अपने स्वामी के लिए किरमान, ख़्वारिज़्म और मर्व में जाकर लड़े। ग़ज़नवियों के सैनिक अभियान के इतिहास में हिन्दू सैनिक सरदारों में तिलक, सौदीराय और हजराय के नाम विशेष हैं। ग़ज़नवियों के शासन में इन हिन्दू सैनिक सरदारों को ऊँची हैसियत प्राप्त रही। वह बहुत भरोसेमंद सरदार समझे जाते थे। ग़ज़नवियों के साथ उनकी वफ़ादारी और सेवा भावना उदाहरण के रूप में प्रस्तुत की जाती।

सुल्तान महमूद की मृत्यु के 15 दिन के बाद ही उसके बेटे सुल्तान मसऊद ने एक हिन्दू सैनिक सरदार सबुन्दा राय को हिन्दू सवारों के साथ उन सरदारों के विरुद्ध भेजा जो उसके भाई के समर्थक थे। पाँच साल के बाद मसऊद ही के आदेश से तिलक ने हिन्दू सिपाहियों के साथ तयालगीन के विरुद्ध सैनिक अभियान भेजा और उसको पराजित करके क़त्ल कर दिया। उसके 5 साल के बाद सुल्तान मसऊद तुर्कमानों से पराजित हो कर ग़ज़नी से हिन्दुस्तान चला आया तो उसने यहाँ एक बड़ी सेना एकत्र की जिसमें एक बड़ी संख्या हिन्दुओं की थी। बैहक़ी ने अपने इतिहास में ग़ज़नवी काल के हिन्दू सैनिक सरदार तिलक का उल्लेख जिस तरह किया है, उससे अनुमान होगा कि हिन्दू उसके शासनकाल में नीच समझे जाने के बजाए सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे, इसका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित हैः–

तिलक एक हज्जाम का बेटा था, शक्ल–सूरत अच्छी पायी थी, भाषा भी अच्छी बोलता था। हिन्दी और फ़ारसी दोनों लिपियां बहुत अच्छी लिखता था। कुछ दिनों कश्मीर में रहा जहाँ उसने इश्क़बाज़ी और जादूगरी आदि की, कला में भी विशेष योग्यता प्राप्त कर ली थी। वहाँ से क़ाज़ी शीराज़ अबुल हसन के यहाँ आया जो उसकी तरफ़ आकर्षित हो गया। क़ाज़ी ने उसकी गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगा दिया तो उसने इसकी शिकायत ख़्वाजा अहमद हसन से की। ख़्वाजा और क़ाज़ी में सम्बन्ध अच्छे नहीं थे। ख़्वाजा ने तीन व्यक्तियों के माध्यम से शाही फरमान भेज कर तिलक को अपने पास तलब किया। क़ाज़ी की नाराज़गी के बावजूद तिलक दरबार में पेश किया गया। ख़्वाजा अहमद हसन ने तिलक की शिकायत सुनी। फिर उसने अमीर मसऊद का ध्यान बहुत अच्छे ढंग से इस मामले की ओर आकर्षित किया। अमीर मसऊद ने ख़्वाजा को तिलक की शिकायत सुनने के लिए कहा जिसके बाद क़ाज़ी परेशानियों में गिरफ़्त हो गया। इसके बाद तिलक ख़्वाजा का बहुत विश्वस्त हो गया। वह दबीर बनाया गया। हिन्दुओं से जो बात हुई उसका अनुवाद हो गया। इस तरह उसने मन्त्री के दरबार में पहुँच प्राप्त कर ली, वह ख़्वाजा के सामने सदैव रहता, उसके सन्देशों को पहुँचाता और कठिन मामलों को हल करता।

अमीर मसऊद को जब ख़बर मिली कि अहमद नयालस्तगीन ने लाहौर में विद्रोही व्यवहार अपना रखा है तो उसने अपने सेनापति और सैनिक सरदारों को बुला कर परामर्श किया और इस विद्रोह को कुचलने के लिए उसेन परामर्श माँगा। सेनापति ने इस विद्रोह को लाहौर जा कर कुचलने के लिए अपनी सेवा प्रस्तुत की। लेकिन अमीर मसऊद ने उसको वहां जाने से यह कह कर रोका कि अभी तो खुरासान खतलान, तगारिस्तान के विद्रोहों को भी कुचलना है। सिन्ध में किसी और सैनिक सरदार को जाना चाहिए। तिलक भी इस सभा में मौजूद था। वह बोल उठा कि मेरे स्वामी बादशाह की उम्र लम्बी हो, यदि आदेश हो तो यह सेवा उससे ली जाए ताकि वह उन उपकारों और एहसानों का बदला अदा कर सके जिनसे वह अब तक उपकृत किया जा चुका है। वह हिन्दुस्तान का रहने वाला है। वहाँ का मौसम गर्म है, वह आसानी से वहाँ की यात्रा कर सकता है। यदि वह इस अभियान के योग्य घोषित कर दिया गया तो वह अपना फर्ज पूरा कर देगा। उसकी बात सुन कर अमीर खुश हुआ और जो लोग वहां मौजूद थे, उनसे उनका परामर्श लिया। उन्होंने उत्तर दिया कि वह एक प्रसिद्ध आदमी है। इस ज़िम्मेदारी को सम्पन्न करने के लिए पूरी तरह उपयुक्त है। उसके पास तलवार है, युद्ध सामग्री है, आदमी भी हैं और बादशाही उपकार भी उसे प्राप्त हैं। यह काम वह पूरा कर सकता है। अमीर ने अपने परामर्शदाताओं को जाने के लिए कहा ताकि इस मामले पर वह स्वयं विचार कर सके। वह सभा से चले गये। अमीर ने अपने विशेष सलाहकारों से कहा कि मेरे अधिकारियों ने इस मामले में अधिक रुचि नहीं ली और न ही उन्होंने आवश्यक

वफ़ादारी व्यक्त की। इसलिए तिलक लज्जित हुआ और आगे बढ़ कर अपनी सेवा प्रस्तुत की। इसके बाद अमीर ने तिलक के पास एक ईरानी व्यक्ति गुप्त रूप से उपहारों से भरे सन्देश के साथ भेजा कि मैं तुम्हारी उन बातों का सम्मान करता हूँ जो तुमने कही हैं या जो प्रण किया है। लेकिन मेरे सहयोगियों ने इसको पसन्द नहीं किया। तुमने उन सबको शर्मिन्दा किया लेकिन तुम्हारी बातों को सच सिद्ध किया जाएगा। कल तुम इस सेवा के लिए नामित किए जाओगे। मैं तुम्हारे लिए हर संभव बात करूँगा। मैं तुम्हे बड़ी सम्पत्ति दूँगा, एक मज़बूत फ़ौज और हर तरह का आवश्यक सामान साथ करूँगा ताकि तुम्हारे ही माध्यम से यह काम सम्पन्न हो जाए और यह विद्रोह किसी और के उपकार के बिना दब जाए। तुम इससे भी बड़े पद पर नियुक्त किए जाओगे। यह लोग तो पसन्द नहीं करते कि मैं किसी आदमी को पदोन्नति करूँ क्योंकि वह चाहते हैं कि मैं उनकी इच्छा के अनुसार चलूँ। यद्यपि वह कुछ न करें, तुम्हारी पदोन्नति पर वह दुखी हैं। अब तुम इस काम को पूरा करने के लिए पूरा प्रण कर लो। उनकी ओर से ग़लती तो हो चुकी जैसा कि उनके कथन और कर्म से स्पष्ट है। जो हुआ सो हुआ। तिलक ने धरती चूमते हुए कहा कि यदि यह काम इस सेवक के बस से बाहर होता तो उसके मुँह से ऐसी हिम्मत की बातें उस सभा में आपके सामने न निकलतीं जब इसने अपना इरादा प्रकट किया है तो उसको अंजाम तक पहुँचाएगा। वह काम का नक़्शा मंजूरी के लिए प्रस्तुत करेगा, फिर वह जल्दी रवाना हो जाएगा ताकि इस विद्रोह को कुचल सके। उस ईरानी व्यक्ति ने आ कर यह सारी बातें दोहरायी। अमीर ने उनको पसन्द किया और उनको लिखने का आदेश दिया। व्यक्ति ने पूरी मेहनत से इस अभियान के नक़्शें को लिखा जो तिलक ने तैयार किया था। अमीर ने तिलक को सारे अधिकार दे दिए। ताकि वह बाज़ ग़ौरक को पार करने के बाद हिन्दुओं को आज्ञाकारी बना सके।

.....जारी.....

❖❖❖

पृष्ठ..14...का शेष.....

इख़्तियार किसी को नहीं कि वो जो चाहे कर डाले, अगर कोई अपनी ज़रूरत अल्लाह को छोड़ कर किसी और के सामने रखता है, नबी, वली, पीर, इमाम, बुजुर्ग किसी से मांगता है तो ये शिर्क है हाँ दुआ करना बेहतर है, मगर ये सझना कि इस में उनको पूरा अधिकार है, उनकी दुआ कुबूल हो ही जाएगी, अल्लाह उनकी दुआ रद्द कर ही नहीं सकता, ये ख़यालात मुशरिकों वाले हैं, सब अल्लाह के बंदे हैं, अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाते हैं, हाँ! अल्लाह अपने खास बंदों की दुआएं अक्सर कुबूल करता है। इसी तरह ये मुशरिकना जुमला अच्छे अच्छे लोगों के मुंह से निकल जाता है कि हज़रत तसर्रुफ फरमा दें तो काम हो जाए। तसर्रुफ़ अल्लाह का हक है, उसकी इजाजत के बगैर कोई कुछ नहीं कर सकता, किसी के बारे में ये समझना कि ये जो चाहेंगे हो जाएगा, मुशरिकों वाली सोच है और तौहीद के अकीदे के खिलाफ है।

तौहीदे उलूहियत और तौहीदे रुबूबियत के साथ अल्लाह की सिफात में भी तौहीद जरूरी है, इसके बिना तौहीद का अकीदा नाकिस है।

❖❖❖

अच्छे व्यवहार की शिक्षा

मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी रह0

समाज में जो भी व्यक्ति सेवा का हक़दार हो उसकी सेवा होनी चाहिए। इस्लाम ने यह भी बताया है कि सेवा और अच्छे व्यवहार के प्राथमिक अधिकारी कौन हैं। इन्सान को माँ–बाप, बाल–बच्चों और निकटतम सम्बन्धियों से स्वाभाविक रूप से प्रेम होता है। वह उनसे एक विशेष हार्दिक सम्बन्ध महसूस करता है, इसी कारण उनकी सेवा को अपना नैतिक कर्तव्य समझता है, परन्तु समाज के अन्य लोगों के साथ इस प्रकार का भावनात्मक लगाव उसके अन्दर नहीं होता, अतः उनके साथ उसका व्यवहार भी भिन्न होता है। इस्लाम इन्सानों के बीच सम्बन्धों के प्रकार, उनके पदों और श्रेणियों को पूरी तरह ध्यान में रखता और उनके अधिकारों का निर्धारण करता है।

इसके साथ उसकी शिक्षा यह है कि इन्सान मात्र उन्हीं व्यक्तियों की सेवा करने को अपना कर्तव्य न समझे जिनसे उसका खून का सम्बन्ध है, बल्कि वह उन लोगों के साथ भी अच्छा व्यवहार करे जिनसे उसका कोई रिश्ता–नाता नहीं है। उसकी सेवा और सद्व्यवहार का क्षेत्र उसके घर और परिवार से आगे बढ़ कर समूचे समाज तक फ़ैल जाए। वह सम्पूर्ण मानवजाति को अपना परिवार समझ कर उसकी सेवा के लिए खड़ा हो जाए। कुरआन की सूरा 'निसा' की एक आयत अति संक्षिपत रूप में बताती है कि वे कौन लोग हैं जो सेवा और अच्छे व्यवहार के अधिकारी हैं और जिनसे ग़फ़लत और लापरवाही नहीं बरती जा सकती। यह आयत यह है–

''और अल्लाह ही की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ, अनाथों, मुहताजों, नातेदार, पड़ोसियों के साथ और उन पड़ोसियों के साथ जो अजनबी हों, और पास के व्यक्ति के साथ और साथ के मुसाफ़िरों के साथ और उन (लौंडी–गुलामों) के साथ जो तुम्हारे अधिकार में हों। निस्संदेह अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो इतराने वाला और डींग मारने वाला हो।'' (4:36)

इस आयत में हालांकि समाज के उन समस्त कमज़ोर और वंचित वर्गों का उल्लेख नहीं है जिनकी सेवा करने की कुर्आन ताकीद करता है, परन्तु इससे उसके सहानुभूतिपूर्ण तथा प्रेम से भरे हुए व्यवहार को समझने में सहायता मिलती है। यहां हम इस आयत की संक्षिप्त व्याख्या करेंगे, लेकिन इससे पहले यह बात स्पष्ट कर देना उचित होगा कि कुरआन ने 'सेवा' के लिए 'एहसान' का पारिभाषिक शब्द प्रयोग किया है।

यह बड़ा व्यापाक शब्द है जो सेवा के सभी पहलुओं पर हावी है। इसमें ढाढ़स, सहानुभूति, प्रेम, आवश्यकताओं का पूरा करना तथा किसी को उसके अधिकार से अधिक देना आदि सब कुछ आ जाता है।

माँ–बाप के साथ अच्छा व्यवहारः–

कुरआन में एक अल्लाह की इबादत का आदेश देने के पश्चात इन्सानों के साथ अच्छे व्यवहार की हिदायत की गयी है। इस विषय में सबसे पहले माँ–बाप का उल्लेख किया गया है– ***''माँ–बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो''। (4:36)***

माँ–बाप की सेवा की शिक्षा दुनिया के प्रत्येक धर्म ने दी है। कुरआन मजीद में एक दो नहीं, बल्कि अनेक स्थानों पर अल्लाह की इबादत के पश्चात माँ–बाप के साथ अच्छे व्यवहार का आदेश दिया गया है। इसमें यह संकेत है कि इन्सान पर सबसे अधिक उपकार अल्लाह तआला के हैं। उसके बाद माँ–बाप के उपकार हैं। इन्सान का अस्तित्व, उसका जन्म, पालन–पोषण, देखभाल, शिक्षा–दीक्षा तथा उसके आर्थिक एंव नैतिक विकास आदि में माँ–बाप अधिक भागीदार होते हैं। यदि वे ध्यान न दें तो वह उन्नति नहीं कर सकता, बल्कि उसका अस्तित्व ही ख़तरे में पड़ सकता है। अशिक्षित से अशिक्षित तथा दरिद्र माँ–बाप भी संतान के लिए जो कुरबानी देते हैं, इन्सानी समाज में इसका कोई दूसरा उदाहरण नहीं दिया जा सकता है। उनके उपकारों में अल्लाह तआला के उपकारों की झलक दिखायी पड़ती है।

अल्लाह की इबादत वास्तव में उसके उपकारों के प्रति कृतज्ञता–प्रकाशन है। माँ–बाप का स्थान चूंकि अल्लाह के बराबर नहीं है। अतः उनकी उपासना तो नहीं की जा सकती, परन्तु उनके साथ अच्छा व्यवहार करना अनिवार्य है। वही उनके उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकाशन है। कुरआन ने अल्लाह तआला के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का भी आदेश दिया है और माँ–बाप के प्रति कृतज्ञता दिखाने की भी हिदायत की है–

''मेरे प्रति कृतज्ञ हो और अपने माँ–बाप के प्रति भी। मेरी ही ओर पलट कर आना है''। (31:14)

वर्तमान सभ्यता ने पारिवारिक व्यवस्था को छिन्न–भिन्न करके रख दिया है। इसके साथ वे उच्चतम नैतिक मूल्य भी समाप्त होते जा रहे हैं जो इस व्यवस्था से सम्बद्ध थे, इसका बड़ा बुरा प्रभाव वृद्ध माँ–बाप पर पड़ा है। आज यत्नपूर्वक इस बात पर विचार किया जा रहा है कि साठ–सत्तर वर्ष के इन बूढ़ों का क्या किया जाए जो हमारे लिए बेकार हो चुके हैं। जब वे भविष्य के निर्माण में सहयोगी नहीं हैं तो उनका भार कब तक सहन किया जाए?

हालांकि जिन बूढ़ों के विषय में इस प्रकार सोचा जाता है उन्होंने वर्तमान पीढ़ी का तथा अपनी संतान को उस समय नदी में नहीं फेंक दिया जबकि वह उनके हाथों में विवश और लाचार थी और उनकी दया एवं कृपा के सहारे जी रही थी, बल्कि उन्होंने उसे अपने जिगर का खून पिला कर पाला–पोसा और जीवन के क्षेत्र में दौड़–धूप के योग्य बनाया। कुरआन ने विशेष रूप से बुढ़ापे में माँ–बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की हैः

''यदि उनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएं तो तुम उन्हें 'उफ' तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे भली प्रकार बात करो और दयालुता और नर्मी के साथ उनके सामने झुक कर रहो, और दुआ करोः ऐ रब! जिस तरह इन्होंने बचपन में दया और प्रेम से मेरा पालन–

पोषण किया है, तू भी इन पर दया कर।'' (17:23-24)

नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहारः-

कुरआन में कहा गया है- ''और नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो।''

कुरआन में माँ-बाप के तुरंत बाद नातेदारों का ज़िक्र यहां भी किया है और अन्य स्थानों पर भी। इसमें इस बात की ओर संकेत है कि माँ-बाप के बाद सबसे अधिक हक़ नातेदारों का है। माँ-बाप ही से नातेदारों की नातेदारी पैदा होती है। अतः आधार तो वही हैं, फिर जो व्यक्ति उनसे जितना क़रीबी सम्बन्ध रखता है उसका हक़ भी उतना ही बढ़ जाता है। नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहार 'सिला रहमी' (ख़ून के रिश्तों को जोड़े रखना और प्रेम करना) है। कुरआन ने इसकी बड़ी ताकीद की है। एक स्थान पर अल्लाह के प्रियजनों की विशेषताएं इस प्रकार बयान की गयी हैः

''(और उनकी नीति यह होती है कि) अल्लाह ने जिन-जिन नातों को जोड़े रखने का आदेश दिया है उन्हें जोड़े रखते हैं, अपने रब से डरते हैं और इस बात से डरते हैं कि कहीं उनसे सख़्त हिसाब न लिया जाए।'' (13:21)

नातेदारों से अच्छा व्यवहार से पूरा सामाजिक जीवन आनन्दमय बन जाता है। जहां यह ख़ूबी न हो वहां सामाजिकता में बिगाड़ आ जाता है। इसी कारण नातेदारों से अच्छे व्यवहार का बड़ा महत्व बताया गया है।

हज़रत सुलैमान बिन आमिर रज़ि0 अल्लाह के रसूल सल्ल0 से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमायाः

''किसी ऐसे मुहताज को (जिससे नाता न हो) सदक़ा देना केवल एक सद्क़ा है, लेकिन वही सद्क़ा किसी संबंधी को दिया जाए तो यह सदक़ा भी है और सिलरहमी (नातेदारों से अच्छा व्यवहार) भी।'' (तिर्मिज़ी, नसई)

अभिप्राय यह कि नातेदारों पर ख़र्च करना दुगुने सवाब (पुण्य) का कारण है। एक पहलू से यह एक सामान्य सदक़ा है जिस प्रकार अन्य सदक़े हैं। दूसरे पहलू से यह नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहार भी है और सिलारहमी भी।

यह एक वास्तविकता है कि इन्सान अपने नातेदारों से स्वाभाविक रूप से निकटता महसूस करता है। इसी के साथ यह भी एक हक़ीक़त है कि कुछ रिश्तों में बड़ी कोमलता पायी जाती है। साधारण-सी घटनाओं से वैमनस्य पैदा हो जाता है और संबंध बिगड़ने लगते हैं। हदीस में कहा गया है कि इन संबंधों को बिगड़ने न दिया जाए और उन्हें क़ायम रखने का हर संभव प्रयत्न किया जाए। अच्छा व्यवहार इसका एक बेहतर तरीक़ा है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमायाः

''नाता जोड़ने वाला (सिलारहमी करने वाला) वह नहीं है जो नातेदारों से उस समय नाता जोड़े जबकि वे भी उसके साथ अच्छा व्यवहार करें, बल्कि वास्तव में नाता जोड़ने वाला तो वह है जो उस समय नातों को जोड़े जबकि वे टूट जाएं।''

(बुख़ारी, अबू दाऊद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 की रिवायत है कि एक व्यक्ति ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से कहा कि ''मेरे कुछ नातेदार हैं। मैं तो उनसे नाता जोड़ता हूँ, परन्तु वे मुझसे नाता तोड़ते हैं। मैं उनसे अच्छा व्यवहार करता हूँ और वे मेरे साथ बुरा व्यवहार करते हैं, मैं उन्हें माफ़ करता हूँ

परन्तु वे मेरे साथ घटिया व्यवहार करते हैं।'' आपने यह सुन कर फ़रमाया ''यदि तुम्हारा व्यवहार ऐसा ही है जैसा कि तुमने बयान किया है तो मानो तुम उनके मुँह में गर्म राख भर रहे हो और जब तक तुम्हारा यह व्यवहार बना रहेगा अल्लाह की ओर से एक मददगार तुम्हारे साथ रहेगा।'' (मुस्लिम)

अनाथों (यतीमों) के साथ अच्छा व्यवहारः—

माँ–बाप और नातेदारों का हक़ सबसे ऊपर है। उनके साथ अच्छे व्यवहार का आदेश देने के बाद समाज के अन्य मुहताज़ों, ज़रूरतमन्दों और कमज़ोरों के साथ सद्व्यवहार का आदेश दिया गया है। इस विषय में सबसे पहले अनाथों और मुहताजों का ज़िक्र किया गया है जो समाज के सबसे कमज़ोर वर्ग होते हैं। कुरआन में है– ''और अनाथों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करो।'' (2:177)

जिस मासूम बच्चे के सिर से उसके बाप की छाया उठ जाए, वह उस खुलूस, प्रेम और ध्यान से वंचित हो जाता है जो उसके पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा तथा प्रायः आर्थिक विकास और स्थिरता के लिए बुनियादी महत्व रखता है। इसलिए यह समाज की ज़िम्मेदारी है कि उसकी आवश्यकताएं पूरी करे और उसे बाप से वंचित होने का एहसास न होने दे।

समाज द्वारा उपेक्षा और बेपरवाई से इतना ही नहीं कि उसका पालन–पोषण ठीक ढंग से नहीं होगा और वह शारीरिक रूप से दुर्बल होगा, बल्कि उसका उचित मानसिक एवं वैचारिक प्रशिक्षण भी नहीं हो सकेगा। आश्चर्य नहीं कि ऐसे क्रूर एवं निर्दयी समाज के विरुद्ध उसके अन्दर विद्रोह की भावना पनपने लगे और वह एक अच्छा नागरिक बनने के स्थान पर पूरे समाज के लिए हानिकारक सिद्ध हो।

कुरआन और हदीस में अनाथों के पालन–पोषण, देखभाल, शिक्षा–दीक्षा, उनकी सम्पत्ति की रक्षा और उनके अधिकारों की पूर्ति पर बार–बार ज़ोर दिया गया है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमायाः

''अनाथ का भरण–पोषण करने वाला, चाहे वह उसका हो या किसी दूसरे का (नातेदार हो अथवा अपरिचित) वह और मैं जन्नत में इस प्रकार क़रीब होंगे जैसे मेरी ये दो उंगलियाँ।''

(मुस्लिम)

हदीस के उल्लेख कर्ता इमाम मालिक ने तर्जनी (शहादत) और बीच की उंगली को आपस में मिला कर दिखाया। (मुस्लिम)

अनाथ अपनी कमज़ोरी और नासमझी के कारण अपने वैध अधिकारों की भी रक्षा नहीं कर पाता। उसके अधिकारों को छीनना हर एक के लिए आसान होता है। कुरआन ने ऐसे लोगों को कठोर दंड की धमकी दी हैः

''निश्चय ही वे लोग जो यतीमों के माल जुल्म से खाते हैं, वे तो अपने पेट आग से भरते हैं, और वे अवश्य जहन्नम की भड़कती हुई आग में डाले जाएंगे।'' (4:10)

इस्लाम पूरे समाज पर यह ज़िम्मेदारी डालता है कि वह यतीमों के न केवल पालन–पोषण की व्यवस्था करे, बल्कि उन्हें दयावान, संयमी, सुशील और शरीफ़ इन्सान बनाने में सहायता करे ताकि वे समाज पर बोझ और मुसीबत बनने के बजाए उसके लिए सम्पत्ति और साधन बन सकें।

.....जारी.....

(कान्ति अक्तूबर 2012 से ग्रहीत)

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एक व्यक्ति ने अपने बड़े भाई के हक़ में अपने मकान की वसीयत कर दी, वसीयत के समय उसके कोई औलाद न थी, इत्तेफाक़ से वसीयत के बाद एक लड़का पैदा हुआ, यह वसीयत जुबानी व तहरीरी दोनों तरह थी और उसने अपनी ज़िन्दगी में वसीयत से रुजुअ़ (प्रवृत्ता) नहीं किया, अब उनका देहान्त हो गया है क्या यह वसीयत लागू होगी? जब कि भतीजा उस वसीयत को लागू करने पर राज़ी नहीं है और यह कह रहा है कि मेरे वालिद ने ला वल्द होने की वजह से वसीयत की थी और उनके जीवित रहते ही मेरी पैदाईश हो गयी, इसलिए अब इसकी ज़रूरत नहीं रही, क्या भतीजे की यह बात शरीअ़त की नज़र में मानी जायेगी?

उत्तरः बयान की गई सूरत में मरहूम के कुल छोड़े गये माल में से अगर मकान की मिल्कियत एक तिहाई है तो भाई के हक में वसीयत दुरुस्त है और यह लागू होगी। अल्लामा इब्ने आबदीन रह0 ने रद्दुल मुहतार पेज 337 जिल्द 10 में वज़ाहत की है कि अगर किसी ने भाई के हक में वसीयत की हालाँकि वह भाई का वारिस हो रहा हो, फिर वसीयत करने वाले के लड़के पैदा हुए तो भाई के हक़ में वसीयत दुरुस्त हुई , भतीजे ने वसीयत लागू न होने की जो वजह बयान की है अगर्चे वह दुरुस्त हो फिर भी वसीयत सही होगी और एक तिहाई माल पर लागू होगी।

प्रश्नः अगर औलाद में कोई नाफरमान हो और वालदैन के साथ अभद्र व्यवहार करता हो, इसकी वजह से वालदैन इसको अपनी जायदाद से बेदखल कर देना चाहते हैं, और यह तहरीर लिख देना चाहते है कि हमारे मरने के बाद हमारी जायदाद में मेरी फुलाँ औलाद जो नाफरमान है, मीरास न मिले और हम उनको आ़क़ करते हैं अर्थात बेदखल करते हैं, तो क्या इस्लामी शरीयत में किसी को मीरास से बेदखल करना दुरुस्त है? और क्या वालदैन का यह फैसला ठीक है?

उत्तरः औलाद की नेकी एंव सौभाग्य इसमें है कि वह माँ–बाप की इताअत व फरमाबरदारी करे अपनी ख्वाहिश पर वालदैन की ख्वाहिश को तरज़ीह़ दे, और वालदैन की ज़िम्मेदारी है कि तमाम बच्चों के साथ लेन देन और दानशीलता में न्याय का व्यवहार करें, अगर कोई नाफरमान हो और वालदैन अपनी जायदाद से महरूम कर देने की तहरीर लिख लें तो यह तहरीर शरअ़न मान्य न होगी, और इस पर अमल दरआमद भी नहीं होगा, और वह औलाद भी छोड़े हुए माल में हिस्सा पायेगी, नाफ़रमानी की वजह से उसका हिस्सा न कम होगा न खत्म होगा।

(तक्मिलः शामी 505–7)

प्रश्नः अगर मकान मालिक को मालूम हो जाये कि इस मकान में किरायेदार गैर इस्लामी हरकतें करते हैं यहाँ तक कि शराब पीते हैं और दूसरी बुराईयाँ भी करते हैं तो क्या मालिक मकान के लिए इस मकान के किराये की आमदनी हासिल करना और इस्तेमाल करना जायज़ है, क्या इसका गुनाह मालिक मकान को भी होगा?

उत्तरः मकान किराये पर देते

वक़्त अगर यह बात मालूम नहीं थी कि इस मकान को ग़लत और बुरे कामों के लिए भी प्रयोग किया जायेगा, लेकिन बाद में किरायेदार उसमें ग़लत हरकतें करता है तो मालिक मकान गुनहगार नहीं होगा, और किराया उसके लिए हलाल होगा, फिर भी उसे कोशिश करनी चाहिए कि जल्द से जल्द ऐसे किरायेदार से मकान खाली करा ले ताकि वह किसी भी दर्जे में गुनाह में मददगार न समझा जाए। (सूरः मायदा–3)

प्रश्नः एक आदमी ने गलत ढंग से रिश्वत वगैरा दे कर ज़ियादा अंक हासिल करके डिग्री हासिल की और उसकी बुन्याद पर नौकरी मिली तो क्या इस नौकरी से जो कमाई होगी वह हलाल है या हराम?

उत्तरः डिग्री गलत ढंग से हासिल करना ग़लत और गुनाह है यह धोके बाज़ी है लेकिन नौकरी में रह कर जो मेहनत की जायेगी उसका मेहनताना लेना दुरुस्त होगा, जायज काम पर जो जायज़ आमदनी होगी, वह शरअन हलाल है और उसका इस्तेमाल जायज है।

(अल बहरुर्राइक 19/8)

प्रश्नः शौहर के इंतेकाल के बाद बीवी का उसके चेहरे को देखना या जिस्म को हाथ लगाना, इसी तरह बीवी के इंतेक़ाल के बाद शौहर का उसके चेहरे को देखना या उसके जिस्म को हाथ लगाना सही है या नहीं?

उत्तरः बीवी के लिए शौहर के इंतेक़ाल के बाद उसको देखना और हाथ लगाना जायज़ है और अगर ज़रूरत हो तो नहलाने की भी इजाज़त है, क्योंकि शौहर के इंतेक़ाल के बाद जब तक इद्दत के दिन न खत्म हों मानो वह उसके निकाह में रहती है, इसलिए उसके लिए देखने छूने और ज़रूरत पड़ने पर नहलाने की भी इजाज़त है, लेकिन शौहर के लिए बीवी के इंतेक़ाल के बाद उसको नहलाना और छूना जायज़ नहीं है क्योंकि मरने के बाद वह एक अजनबी औरत के हुक्म में हो जाती है अल्लामा हसकफी रह0 ने वज़ाहत की है कि शौहर को इंतिक़ाल पाई बीवी को नहलाने और छूने से रोक दिया जाय लेकिन सही क़ौल के मुताबिक देखने से मना नहीं किया जायेगा।

(अलदुर्रुल मुखतार 668/1)

प्रश्नः कफ़न पर कलम–ए–तय्यिबा लिखना कैसा है? क्या हदीस में उसकी कोई फ़ज़ीलत आई है? क्या यह मना तो नहीं है?

उत्तरः कफ़न पर कलम–ए–तय्यिबा लिखना किसी हदीस से साबित नहीं है, फुक़्हा ने कफ़न पर उसको लिखने से मना किया है क्योंकि इसमें कलम–ए–तय्यिबा की बेहुरमती होती है, कभी कभी लाश फूल कर फट जाती है जिससे कफ़न दूषित और नापाक हो जाता है, इसलिए उससे परहेज करना चाहिए। (रद्दुल मुहतार 668/1)

प्रश्नः क्या मुर्दों को सफेद के अलावा कोई रंगीन कफन दिया जा सकता है?

उत्तरः मुर्दों को सफेद कपड़े में कफन देना अफजल है, एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया– अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे पसंदीदा कपड़ा सफेद कपड़ा है जो लोग ज़िन्दा हैं वह सफेद कपड़े को अपना लिबास बनायें और मुर्दों को ऐसे ही कपड़ों में कफ़न दिया जाय।

(मुस्तदरक हाकिम ह0नं0 1309)

नोटः मालूम हुआ कि सफेद कपड़े में कफ़न देना मुस्तहब है, अगर सफेद कपड़ा किसी वजह से न मिल सके तो दूसरे कपड़ों में भी कफ़न दिया जा सकता है। बस यह ख्याल रहे कि वह पाक व साफ़ हो।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

–मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

–अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

शरीयत का क़ानून-ए-तलाक़:-

तलाक़ देने में मर्द का अधिकारः

मुसलमानों के फैमिली लॉ में ''कानून–ए–तलाक़ के इस पहलू पर खासतौर से बहस की जाती है कि इस्लाम ने मर्द को तलाक़ देने की ''बिला शर्त आजादी'' दे रखी है और औरतें तलाक़ के अधिकार से बिलकुल महरूम हैं।

ये मसला बहुत ज़्यादा पेश आने की वजह से सबसे ज़्यादा ज़बानों पर आता है और आलोचना व तब्सरे का विषय बनता है। आलोचना करने वालों की तरफ़ से इस बारे में भी असली व फर्ज़ी हर तरह की घटनाओं और वाकियों का सहारा ले कर औरत के ''मजलूम होने'' और मर्द को इस्लाम की तरफ़ से ''बेजा'' और असाधारण अधिकार मिल जाने का शोर कर के सबूतों से ज़्यादा जज़्बाती नारों के बल पर बाज़ी मार लेने की कोशिश की जाती है।

हालांकि ये सब जानते हैं कि दुनिया के किसी भी फायदेमंद से फायदेमंद क़ानून के ग़लत इस्तेमाल से कभी कभी दुःखद हालात का पैदा हो जाना न असम्भव है, न मुश्किल, बल्कि कभी अच्छे क़ानून के ग़लत इस्तेमाल से उस के नतीजे में अप्रिय घटनाएं और दर्दनाक शक्लें भी पेश आ जाया करती हैं, लेकिन इस तरह के ग़लत इस्तेमाल से पैदा हो जाने वाली किसी न मुनासिब शक़्ल के सामने आ जाने या एक आध दुःखद घटना की वजह से किसी फायदेमंद और सामूहिक रूप से मुनासिब और सुधारात्मक क़ानून के अलाभदायक और जालिम होने का फैसला नहीं किया जाता, और न उसके ख़िलाफ़ ऐसा सख़्त प्रोपेगंडा हुआ करता है।

इस्लाम के दूसरे सभी क़ानूनों की तरह, क़ानून–ए–तलाक़ को भी एक पूरी तफ़्सील और इसके बारे में लगाईं गईं सभी पाबंदियों और शर्तों के साथ मिला कर देखा, और उसे इस्तेमाल किया जाए तो न सिर्फ ये कि इसमें कोई ''खराबी'' नज़र आए, बल्कि उसकी उपयोगिता और ज़रूरत बिल्कुल साफ हो जाए, प्रोपेगण्डे के ज़रिये फैलाए गए आम एहसास के उलट इस्लाम के सारे क़ानूनों की तरह इसकी भी खूबसूर्ती स्पष्ट हो।

तलाक़ के अधिकार का ग़लत इस्तेमालः–

इससे इंकार नहीं कि समाज में हर तरफ़ फैले हुए बिगाड़ के असर से आज कल के मर्द, शरीयत की तरफ से मिले हुए हक को, बहुत ज़्यादा बिला ज़रूरत बल्कि ग़लत इस्तेमाल करने लगे हैं, मगर सोचना चाहिए कि किसी की व्यक्तिगत गलती और बेवकूफी के नतीजे में (जुल्म के तौर पर तलाक़ देने के बजाए) दीन व शरीयत पर इल्जाम लगाने, और तलाक़ के क़ानून को ही ना मुनासिब करार दिए जाने में कौन सी अक़्लमंदी है? और इसका क्या औचित्य है?! इस्लामी शरीयत में बिल्कुल नाजुक हालात और हद दर्जे की मजबूरियों और शदीद ज़रूरतों के वक़्त ही आखिरी उपाय के रूप में हालात के हक़ीक़त पसंदी के साथ मुकाबला करने के लिए तलाक़ का इस्तेमाल जायज़ क़रार दिया गया लेकिन अगर कोई शख़्स ऐसी तलाक़ देता है जो शरीयत में जायज़ नहीं (जैसे एक बार में ही तीन तलाक दे डालता है) तो भी तलाक या तलाकें पड़ जाएंगी

अगरचे ये गुनहगार होगा जिस तरह ''फासिद बै'' बावजूद ना जायज़ होने के बिक्री मान ली जाती है और क्रेता व विक्रेता सामान और कीमत के मालिक हो जाते हैं अगरचे गुनहगार होते हैं इसकी ताईद अबू दाऊद शरीफ की एक हदीस से होती है कि जिसमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर की बीवी को हालते हैज में तलाक़ देने पर अगरचे इसे नापसंद करार दिया गया मगर वो तलाक़ पड़ी हुई समझी गई। (अबू दाऊद, जिल्द 1, पृष्ठः 297) और इस अधिकार का इस्तेमाल सही करार दिया गया।

शरीयत के इस हकीमाना हुक्म की अहमियत का अंदाज़ा लगाने के लिए शायद ये भी काफी हो कि अब वो धर्म और समुदाय भी ''तलाक़'' के जायज़ होने का क़ानून अपने मुल्कों और समुदायों में प्रचलित कर रहे हैं जो अब तक इसकी आलोचना करते आ रहे थे, हिंदुस्तान में 1952 ई० में ''हिन्दू कोड बिल'' के नाम से जो क़ानून पास हुआ वो इसका जीता जागता सबूत है, इसके अलावा एक बहुत ही पक्षपाती ईसाई देश, दक्षिण अमेरिका के एक अहम इलाक़े ब्राजील में कैथोलिक पादरियों के सख़्त विरोध के बावजूद वहां के पार्लिमेंट ने संविधान में संशोधन स्वीकृत कर के तलाक़ की वैधता को वैधानिक रूप दे दिया। हालांकि ब्राजील में कैथोलिक संप्रदाय की आबादी दुनिया में सब से ज़्यादा है।

(सिद्क–ए–जदीद दिनांक 1 जुलाई 1977 ई० संस्करण 3, जिल्द 27)

यहाँ ये जिक्र करना भी बेजा न होगा कि दुनिया के अधिकतर धर्मों और समुदायों में तलाक़ ही नहीं है जिनमें हिन्दू धर्म भी है क्योंकि इस धर्म में शादी का बंधन पूरी उम्र के लिए होता है बल्कि ये कहना बेजा न होगा कि एक के मर जाने के बाद भी दूसरे के (खासतौर पर बीवी के) हक में बाकी रहता है कि वो पति की मौत के बाद दूसरे से शादी नहीं कर सकती (यही वजह है कि हिन्दू औरतें सती हो जाया करती थीं, क्योंकि बीवी की ज़िन्दगी, मौत से बदतर हो जाया करती थी) लेकिन ये ऐसी अप्राकृतिक दशा थी जिसे बदलना ज़रूरी समझा गया, लिहाजा अब तकरीबन सभी उल्लेखनीय धर्मों के लोगों ने किसी न किसी शक़्ल में अलगाव के बाद चाहे मौत से हो या किसी और तरीक़े से दूसरी शादी करने का क़ानूनी हक दे दिया है और न सिर्फ मौत की वजह से बल्कि और दूसरी वजहों से भी अलगाव का हक तस्लीम कर लिया गया है, मगर वो अदालत के जरिये से ही हासिल किया जा सकता है, इस में सब से ज़्यादा इबरत लेने के लायक़ ये बात है कि सन् 54 ई० में लागू हिन्दू कोड बिल में पति से संबंध खत्म हो जाने के बाद दूसरी शादी करने के लिए एक साल का अंतराल (मानो इद्दत) रखा गया था, मगर फिर इसे बहुत ज़्यादा लम्बा और ना काबिले बर्दाश्त समझ कर इस क़ानून के अंदर मई 1976 ई० में संशोधन कर के ये अवधि 6 महीने कर दी गई।

(क़ौमी आवाज़, दिनांक 13 मई 1976)

इस संशोधन से पहले एक हिन्दू केंद्रीय मंत्री का बयान अख़बारों में आ चुका था कि ये अवधी तीन महीने होनी चाहिए मानो तकरीबन वही अवधि जो इस्लामी क़ानून के अंदर उस तलाक़ शुदा औरत के लिए निर्धारित की गई है जो गर्भवती न हो, क्या इसके बाद भी इस्लामी कानून–ए–तलाक़ व इद्दत के बारे में किसी नुक़्ताचीनी की गुंजाइश किसी लेखक के लिए रह जाती है!

(औरत के हुकूक)

.....ज़ारी.....

❖❖❖

इस्लामी जगत के प्रसिद्ध आलिमे दीन अल्लामा यूसुफ़ क़रज़वी का इन्तिक़ाल

दिनांक 26 सितम्बर 2022 ई0 को दौहा, क़तर में अल्लामा यूसुफ़ क़रज़ावी का इन्तिक़ाल हो गया ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' इन्तिक़ाल के समय मरहूम की उम्र 96 वर्ष थी, आप सौ से अधिक किताबों के लेखक थे, अधिकांश किताबों का अनुवाद दुनिया की विभिन्न भाषाओं में हो चुका है, इसके अलावा सोशल मीडिया पर भी आपके चाहने वालों की संख्या लाखों में है।

अल्लाह तआला आपकी मग़फ़िरत फ़रमाए और जन्नत में आला मुक़ाम अता फ़रमाए।

मौलाना निज़ामुद्दीन इस्लाही का इन्तिक़ालः–

जमाते इस्लामी हिन्द के पहले अमीर मौलाना अबुल लैस, इस्लाही के चचा ज़ाद भाई, मौलाना अमीन अहसन इस्लाही के आख़िरी शागिर्द, जिला आज़मगढ़ के सबसे पुराने इस्लाही मुजाहिदे आज़ादी मौलाना निज़ामुद्दीन इस्लाही का 24 सितम्बर 2022 ई0 को इन्तिक़ाल हो गया, उन्होंने अपने पीछे भरा पूरा कुम्बा छोड़ा है, नमाज़ जनाज़ा मरहूम के बड़े बेटे मौलाना नसीरुद्दीन ने पढ़ाई अल्लाह तआला मौलाना मरहूम के दरजात बलन्द फ़रमाए और जन्नत में आला मुक़ाम अता फ़रमाए।

मौलाना रहीमुद्दीन अन्सारी हैदराबादी अल्लाह की रहमत मेंः–

मौलाना बड़ी ख़ूबियों और सलाहियत वाले इन्सान थे, मिल्लत के लिए उनका वजूद बड़ा कीमती था ''सच्चा राही'' के पाठकों से मौलाना अन्सारी के लिए दुआ–ए–मग़फ़िरत की दरख़्वास्त है।

मुलायम सिंह यादव का निधन, हम सबके लिए बहुत ही दुखद और खेद जनक

नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ और अध्यक्ष आल इण्डिया मुस्लिम प्रसनल लॉ बोर्ड मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी ने भूतपूर्व मुख्य मंत्री उ0प्र0 मुलायम सिंह यादव के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि वह अल्पसंख्यक के लिए संवेदनशील थे। और उनके वैधानिक अधिकारों और उनके विकास, उन्नति के लिए प्रयास करते थे। मौलाना ने कहा उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा प्रान्त है जहाँ विभिन्न जातियों और धर्मों के लोग रहते हैं मुलायम सिंह यादव इस पहलू को नज़र में रखते थे सभी धर्मो और वर्गों का लिहाज़ करते हुए सबको साथ में ले कर चलने की कोशिश करते थे, इस प्रसंग में उन्होंने कुछ अच्छे और ठोस काम किये, उनके निधन से हम सब का बड़ा घाटा है, मौलाना नदवी ने अपने कथन में कहा कि मुलायम सिंह यादव मौलाना अबुल हसन अली नदवी के बड़े श्रद्धावान थे, मौलाना अली मियाँ ने अपनी आत्म कथा ''कारवाने ज़िन्दगी'' में उनके इस संबंध को सराहा है, इस तरह वह हम सबसे गहरा संबंध व सम्पर्क रखते थे वह अकसर नदवतुल उलमा इस सम्बन्ध से आया करते थे, यहां होने वाले विश्व स्तर के प्रोग्रामों और कांफ्रेंसों के इन्तिज़िमात में दिलचस्पी लेते थे, मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी ने उनके बेटे अखलेश यादव पूर्व मुख्यमंत्री उ0प्र0 और अन्य रिश्तेदारों से शोक प्रकट किया और सन्तोष, धैर्य का उपदेश दिया। ◆◇◆

–पिछले अंक से आगे

संवैधानिक मूल्य और इस्लाम धर्म

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

बन्धुताः–

आगे बढ़ते हुए बन्धुता पर चर्चा करते हैं कि इस्लाम ने शुरू से ही भाईचारे पर ज़ोर दिया है, जब हज़रत मुहम्मद साहब मक्का त्याग कर मदीना पहुंचे तो वहां की यहूदी आबादी से समझौता किया ताकि अमन व शांति और सद्भावना तथा भाईचारे के साथ रह सकें।

इस्लाम इस बात को ले कर संवेदनशील है और इसका ध्यान रखता है कि जगत के सभी लोग एक माँ–बाप के सन्तान और एक दूसरे के भाई–बहन हैं, पवित्र कुरआन में हैः– *"ऐ लोगो! हमने तुम सबको एक ही मर्द और एक औरत से पैदा किया है और तुमको कबीलों और खानदानों में इसलिए बांटा है ताकि एक दूसरे को पहचान सको"।*

(सूरः अल हुजरात–13)

हज़रत मुहम्मद साहब जब अपने जीवन के अंतिम हज पर गए तो साफ शब्दों में कहा कि "निस्संदेह तुम्हारा पालनहार एक है और तुम्हारे बाप भी एक ही हैं"।

ज्ञात हो कि जब एक ही माँ–बाप से पैदा होने की परिकल्पना परवान चढ़ती है तो ये बात दिल में घर करती है कि जगत के सभी लोग चाहे वह किसी भी धर्म के फॉलोवर्स हों,चाहे अमीर हों या गरीब,चाहे काले हों या गोरे सब भाई–भाई हैं। एक स्थान पर इसको और अधिक स्पष्ट करते हुए हजरत मुहम्मद साहब ने कहा "सभी व्यक्ति भाई–भाई हैं"।

इस्लाम ने इस पर विशेष जोर दिया है कि मानव होने के नाते सभी मानव सम्मान और प्रतिष्ठा के अधिकारी हैं और जगत में जितने भी संसाधन हैं उसपर सभी का अधिकार है, इसमें किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाएगा, पवित्र कुरआन में हैः–

"हमने आदम की संतान को सम्मानित बनाया है,हमने उनको खुश्की और समुद्र में सवार किया है और उन्हें पवित्र जीविका दी है।"

(सूरः बनी इस्राइल–70)

इस्लाम ने यहां ये बात कही है कि संसाधन, जीविका, मान–सम्मान, अवसर आदि में मुस्लिम और गैर मुस्लिम में कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा।जो अल्लाह को मानने और जो इंकार करने वाले हैं उनका भी इन तमाम में हक और अधिकार है।

हज़रत मुहम्मद साहब ने कई गैर मुस्लिम राजाओं को पत्र लिखा और उन्हें उसी अंदाज में सम्बोधित किया जैसा उनकी प्रजा सम्मान के साथ सम्बोधित करती थी। हज़रत मुहम्मद साहब लोगों को अपनी आयु से बड़े लोगों को सम्मान करने का आदेश देते थे, और उसमें मुस्लिम और गैर मुस्लिम की कैद नहीं थी। यहां तक कि जब गैर मुस्लिम भाई या बहन का जनाजा या शव गुजरता तो हजरत मुहम्मद साहब सम्मान देने के लिये खड़े हो जाते,एक बार किसी ने याद दिलाया कि ये तो यहूदी का जनाजा जा रहा है तो मुहम्मद साहब ने कहा, क्या वह इंसान नहीं था?

इसी तरह हज़रत मुहम्मद साहब गैर मुस्लिम की शव यात्रा में शामिल होते, उन्होंने अपने

चचा अबू तालिब (जिन्होंने कभी इस्लाम धर्म नहीं अपनाया) के दफनाये जाने वाले स्थान तक गए और उन्होंने अपने दामाद हजरत अली को जो कि अबु तालिब के बेटे थे को आदेश दिया कि वह अपने पिता के कफन–दफन का प्रबंध करें। इसी प्रकार बहुत से ऐसे हजरात मुहम्मद साहब के सहचर थे जिनके माता–पिता, रिश्तेदार आदि मुसलमान नहीं हुए थे तो जब उनका देहांत होता तो वह भी उनकी शव यात्रा में शामिल होते। इन सब बातों से इस्लामी विद्धवानों ने ताकीद की कि यदि किसी गैर मुस्लिम का देहांत हो जाय तो मानवता और सामाजिकता के नाते उसके यहाँ पुरसा देने जाना चाहिए।

इसी प्रकार हजरत मुहम्मद साहब के कई सहचरों के माता–पिता ने इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं किया मगर उन सहचरों ने उनकी सेवा और सम्मान में कोई कसर नहीं छोड़ी, हजरत मुहम्मद साहब के सगे चचा ने इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं किया मगर मुहम्मद साहब ने उनका सदैव सम्मान किया और उनकी हर तरह की मदद करते रहे। हजरत मुहम्मद साहब के कुछ सहचर अपने गैर मुस्लिम रिश्तेदारों की आर्थिक मदद किया करते थे, एक बार इन लोगों ने उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने का निमंत्रण भेजा तो उन रिश्तेदारों ने इंकार कर दिया,इस पर इन लोगों ने उनकी आर्थिक मदद रोक दी, पवित्र कुरआन ने उनके इस व्यवहार को पसंद नहीं किया और कहा किः–

"उनकी हिदायत (सत्य धर्म पर लाना) तुम्हारे जिम्मे नहीं है, अल्लाह जिसको चाहते हैं हिदायत देते हैं"।

(सूरः बकरा–272)

एक बार मक्का में अकाल पड़ा, ये वह समय था जब मक्का वालों के अत्याचार से तंग आ कर हज़रत मुहम्मद साहब मक्का शहर छोड़ कर मदीने आकर रहने लगे थे, तो हजरत मुहम्मद साहब ने पांच सौ दीनार मक्का वालों को जिसमें अधिकतर गैर मुस्लिम थे, आर्थिक मदद के तौर पर भेजवाया। ज्ञात हो कि बीस दीनार साढ़े सत्तासी ग्राम सोने के बराबर होता है और ये रकम भी उन्होंने अपने दुश्मन, जो उस समय तक मुसलमान नहीं हुए थे, के हाथ भेजवाया और उन्हीं से ये बंटवाया।

हज़रत मुहम्मद साहब रहम–दया और अच्छे व्यवहार की शिक्षा अपने सहचरों को निरन्तर देते और कहते किः–

"तुम् उन लोगों पर रहम करो जो जमीन में हैं तो तुमपर वह रहम करेगा जो आसमान में है"। (तिर्मिजी 1924)

इसी प्रकार एक स्थान पर कहते हैंः– ''जो व्यक्ति इंसान पर मेहरबानी नहीं करता, रब भी उस पर मेहरबानी नहीं करेंगे''।

(बुखारी 6941)

हज़रत मुहम्मद साहब के इन कथनों में मुस्लिम–गैर मुस्लिम का भेद नहीं है,सबसे दिलचस्प ये है कि इस्लाम के निकट गैर मुस्लिम भाइयों की जान–माल की रक्षा उतनी ही प्रतिष्ठित है जितना कि एक मुसलमान की, इसलिए हज़रत मुहम्मद साहब ने एक स्थान पर ये सिद्धांत बयान किया किः–

"उनके खून हमारे खून की तरह हैं, और उनके माल (सम्पत्ति) हमारे माल की तरह हैं"। (नसबुर राया 3381)

हज़रत मुहम्मद साहब ने शान्ति काल में जब किसी समुदाय–क्षेत्र आदि से अमन

का समझौता होता तो उसको पूरी मजबूती और ईमानदारी से निभाने का आदेश देते, उनके कथनानुसारः– "जिसने किसी गैर मुस्लिम को जिससे शांतिमय जीवन बिताने का समझौता हुआ था को कत्ल कर दिया वह जन्नत की खुश्बू भी नहीं पाएगा (अर्थात जन्नत में नहीं जाएगा)"।

(बुखारी–3166)

हजरत मुहम्मद साहब के जीवन काल मे एक बेगुनाह गैर मुस्लिम को एक मुसलमान ने कत्ल कर दिया तो उसके बदले में उस मुसलमान को भी कत्ल किया गया, मुहम्मद साहब के बाद जो उनके उत्तराधिकारी हुए उन्होंने भी इसी सिद्धांत पर अमल किया।

इसी प्रकार जब कोई बीमार पड़ता तो हज़रत मुहम्मद साहब और उनके सहचर चाहे मुस्लिम हो या गैर मुस्लिम, उनका कुशल क्षेम पूछने उनके घर जाते।वह किस्सा मशहूर है कि एक गैर मुस्लिम बुढ़िया प्रतिदिन हज़रत मुहम्मद साहब के ऊपर कूड़े फेंकती, एक दिन बुढ़िया ने उनपर कूड़ा नहीं फेंका तो उन्हें हैरत हुई,पता लगाया तो मालूम हुआ कि वह बीमार है,हजरत मुहम्मद साहब तुरंत उसकी खैर–खैरियत लेने उसके घर पहुंचे, बुढ़िया ने अपना व्यवहार याद किया और हज़रत मुहम्मद साहब का व्यवहार देखा तो लज्जित हूई और अंत में उनसे श्रद्धा रखने लगी।

हजरत मुहम्मद साहब ने साफ शब्दों में कहा कि" रोगियों से कुशलक्षेम पूछा करो,जो मरीज की खैर–खैरियत लेता है वह जन्नत के बागों में से एक बाग में रहता है"।

(मुस्लिम–2548)

कुशलक्षेम पूछने में मुस्लिम गैर मुस्लिम में भेद नहीं है, हज़रत मुहम्मद साहब के यहां एक यहूदी लड़का रहता था और उनके कामों में हाथ बंटाता था,जब वह एक दिन बीमार हुआ तो हजरत मुहम्मद साहब ने उसके घर जा कर उसकी ख़ैर–ख़ैरियत ली।

भाईचारा और प्रेम को बढ़ावा देने में एक दूसरे को खाने–पीने की दावत देना सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण रोल अदा करता है, हमारे यहाँ एक देसी मुहावरा बोला जाता है कि दिल का रास्ता पेट से हो कर गुजरता है, इसलिए इस्लाम ने इसकी ओर ताकीद की है कि लोग एक दूसरे को खिलाये–पिलाएं क्योंकि उससे प्रेम बढ़ता है। हजरत मुहम्मद साहब जब सन्देष्टा बनाये गए तो अपने घराने के लगभग सभी लोगों को खाने का निमंत्रण दिया और खाने के बाद अपनी बात रखी।

हज़रत मुहम्मद साहब ने जब हजरत मैमूना से शादी की तो वलीमा किया और मक्का वालों को जोकि अभी तक मुसलमान नही हुए थे, उन्हें भी खाने की दावत दी।

हज़रत मुहम्मद साहब के यहाँ अक्सर मेहमान आते तो आप बड़ी खुशदिली से मेजबानी करते, उसमें बहुत से गैर मुस्लिम जो अधिकतर किसी कबीले के सरदार थे या आम आदमी भी होते, मेहमान बनते जिनकी आप खातिरदारी करते। मुहम्मद साहब केवल दावत देते ही नहीं बल्कि दावत कुबूल भी करते।

हज़रत मुहम्मद साहब का अपने सहचरों को इस बात पर उभारने पर वह लोग भी अपने मुस्लिम और गैर मुस्लिम मेहमानों को दावत देते, उन्हें अपने यहाँ ठहराते, खिलाते–पिलाते और उन्हें ससम्मान विदा करते।

भाईचारे और बन्धुता के सम्बंध में पड़ोसियों की भूमिका को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा

सकता, क्योंकि हमारी बन्धुता का प्रथम प्रदर्शन पड़ोसियों के साथ अच्छे व्यवहार से जुड़ा है, इसलिए इस्लाम पड़ोसियों को बहुत अहमियत देता है, पवित्र कुरआन में दो प्रकार के पड़ोसियों का वर्णन है, एक रिश्तेदार पड़ोसी और एक अजनबी पड़ोसी।

पड़ोसी के सम्बंध में हज़रत मुहम्मद साहब कहते हैं किः– "वह व्यक्ति ईमान वाला नहीं जिसकी बुराई से पड़ोसी सुरक्षित न हों"। (बुखारी–5671) ये बात मुहम्मद साहब ने तीन बार कसम खा कर कही। ज्ञात हो कि इस पड़ोसी में मुस्लिम–गैर मुस्लिम का अंतर नहीं और सभी के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की गई है।

एक और अवसर पर हजरत मुहम्मद साहब ने कहा– ''जो अल्लाह पर और प्रलय के दिन पर आस्था रखता हो, उसे चाहिए कि वह अपने पड़ोसी को दुःख न दे।''

(बुखारी–मुस्लिम)

अन्य अवसर पर हज़रत मुहम्मद साहब ने कहा– ''अल्लाह के निकट मित्रों में वह अच्छा है, जो अपने मित्रों के लिए अच्छा हो और पड़ोसियों में वह अच्छा है, जो अपने पड़ोसियों के लिए अच्छा हो।''

(तिर्मिजी)

किताबों में है कि एक बार हज़रत मुहम्मद साहब ने अपनी पत्नी हज़रत आइशा (रज़ि0) को शिक्षा देते हुए कहाः–

''जिब्रील (अलै0) हमको बराबर पड़ोसियों के बारे में वसीयत करते रहे, यहां तक कि मुझको ख़्याल हुआ कि कहीं विरासत में उन्हें भागीदार न बना दें।'' (बुखारी–मुस्लिम)

इसका साफ अर्थ यह भी है कि पड़ोसी के अधिकार अपने निकटतम संबंधियों से कम नहीं।

एक बार हजरत मुहम्मद साहब ने अपने एक साथी हज़रत अबूजर (रज़ि0) को नसीहत करते हुए कहा– 'अबूजर! जब सालन पकाओ तो पानी बढ़ा दिया करो और अपने पड़ोसी का ख़्याल रखो"

(मुस्लिम)

ऐसा देखा गया है कि स्त्रियों से पड़ोस का संबंध अधिक होता है, इसलिए हजरत मुहम्मद साहब ने स्त्रियों को संबोधित करते हुए विशेष रूप से कहा– 'ऐ मुसलमानों की औरतो! तुममें कोई पड़ोसन अपनी पड़ोसन के उपहार को तुच्छ ना समझे, चाहे वह बकरी का खुर ही क्यों ना हो।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने पड़ोसियों की खोज–खबर लेने की बड़ी ताकीद की है और इस बात पर बहुत बल दिया है कि कोई मुसलमान अपने पड़ोसी के कष्ट और दुख से बेख़बर न रहे।

अब आगे मुसलमानों के एक कल्चर के बारे में वर्णन है, वह है सलाम करना, ये इतना अट्रैक्टिव है कि बहुत से देशबन्धु भी जब मुसलमानों से मिलते हैं तो अस्सलामु अलैकुम ही से उनका अभिवादन करते हैं, अस्सलामु अलैकुम का अर्थ "तुम पर सलामती हो" एक प्रकार से ये दुआ है, जो किसी को भी दी जा सकती है चाहे वह मुस्लिम हो या गैर मुस्लिम।

हज़रत इब्राहीम अलै0 के पिता मुसलमान नहीं थे मगर उन्होंने अपने पिता को सलाम किया। हज़रत मुहम्मद साहब ने एक बैठक में मौजूद लोगों को सलाम किया जबकि उसमें मुस्लिम गैर मुस्लिम दोनों मौजूद थे।.....

❖❖❖

गुलज़ारी लाल नन्दा: सियासत के रोल मॉडल

प्रोफ़ेसर अतीक़ अहमद फ़ारूक़ी

गुलज़ारी लाल नन्दा के विषय में इस हद तक ज़्यादातर लोग जानते हैं कि वह अपने सियासी सफ़र में दो बार थोड़े समय के लिए भारत वर्ष के प्रधानमंत्री रह चुके हैं। दर अस्ल जवाहर लाल नेहरू और लाल बहादुर शास्त्री के निधन के बाद उन्हें इस मन्सब पर पदासीन होने का अवसर मिला था, मेरा नज़रिया ये है कि अगर हिन्दुस्तान की सियासत में एक ऐसे शख़्स को तलाश करना हो जो सबसे ज़ियादा ईमानदार, शरीफ़, सिद्धान्त वादी हो तो गुलज़ारी लाल नन्दा का नाम बिना मतभेद सर्वप्रथम होगा, उनसे सम्बन्धित एक छोटा क़िस्सा इस नज़रिये की पुष्टि करता है, सियासत से अलग होने के बाद नन्दा जी अपनी लड़की के घर गुज़रात अहमदाबाद रहने लगे, वक़्त गुज़रने के साथ जब लड़की का देहान्त हो गया तो वह उसी मकान में किराएदार के तौर पर रहने लगे, 90 वर्ष के वृद्ध आदमी के पास कोई पैसा नहीं बचा था, मालिक मकान को पाँच महीने से किराया नहीं दे पाया था, एक दिन मालिक मकान गुस्से में किराया वसूल करने के लिए आया और उनका सामान घर से बाहर फेंक दिया, सामान भी क्या था, एक चारपाई, एक प्लास्टिक की बाल्टी और कुछ पुराने बरतन, वह बूढ़ा आदमी ख़ामोशी के साथ अपने सामान के साथ फुटपाथ पर बैठा था, महल्ले वाले मिल जुल कर मालिक, मकान के पास गए, उन लोगों ने मालिक मकान से अनुरोध किया कि बूढ़े आदमी को वापस घर में रहने की इज़ाज़त दे दीजिए, क्योंकि उसका कोई वली और वारिस नहीं है, यह दो महीने में अपना पूरा किराया कहीं न कहीं से कर्ज़ लेकर अदा कर देगा, इत्तिफ़ाक़ से एक अख़बार का रिपोर्टर वहाँ से गुज़र रहा था, उसे कमज़ोर और लाचार आदमी पर बहुत तरस आया, और उनसे सम्बनिधत फोटू खींचे, रिपोर्टर अपने एडीटर के पास गया और बताया कि किस तरह एक मजबूर, लावारिस और ग़रीब इंसान को मालिक मकान ने घर से बाहर निकाल दिया, एडीटर ने उस बुज़ुर्ग आदमी की तस्वीरें देखीं तो चौंक उठा। उसने रिपोर्टर से पूछा कि क्या तुम इस आदमी को नहीं जानते हो? रिपोर्टर हंसने लगा कि एडीटर साहब! इस आदमी में कौन सी ऐसी ख़ास बात है कि कोई उस पर ध्यान दे, उसे तो उसके महल्ले वाले भी नहीं जानते, वह एक वक़्त का खाना खाता है अपने बरतन भी ख़ुद ही धोता है, मामूली से घर में झाड़ू पोछा भी ख़ुद ही करता है, उसको कौन जानेगा? एडीटर ने बहुत ही मंभीरता के साथ रिपोर्टर को बताया कि ये आदमी दो बार भारत वर्ष का प्रधानमंत्री रह चुका है, इस का नाम गुलज़ारी लाल नन्दा है।

रिपोर्टर का मुँह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया,

भारत वर्ष का भूतपूर्व प्रधानमंत्री और इस दुर्दशा में–ख़बर अगले दिन समाचार पत्र में छपी तो क़यामत आ गई, लोगों को मालूम हो गया कि यह बूढ़ा कमज़ोर आदमी भारत वर्ष का दो बार प्रधानमंत्री रह चुका है, मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री को भी मालूम हो गया कि गुलज़ारी लाल नन्दा किस ग़रीबी में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, ख़बर छपते ही कुछ घण्टों के बाद राज्य के मुख्यमंत्री, चीफ़ सिक्रेट्री, और कई मंत्री उस महल्ले में पहुँच गये, सब ने हाथ जोड़ कर कहा कि आप को सरकारी घर में हम ट्रांफ़र कर देते हैं और मासिक वज़ीफ़ा नियुक्त कर देते हैं, ख़ुदा के वास्ते इस मामूली मकान को छोड़ दें, मगर गुलज़ारी लाल नन्दा ने सख़्ती से इन्कार कर दिया और कहा कि उन्हें किसी भी प्रकार की सरकारी सुहूलत पर अधिकार नहीं, वह उस क्वार्टर को नहीं छोड़ेंगे। गुलज़ारी लाल नन्दा के कुछ रिश्तेदारों ने मिन्नत समाजत कर के बहर हाल इस बात पर आमादा कर लिया कि वह हर माह पाँच सौ रूपये स्वीकार कर लें, भूतपूर्व प्रधानमंत्री बड़ी मुश्किल से यह रक़म लेने पर तैयार हुए, चुनांचि इस मामूली रक़म में उनका किराया, खाना पीना शुरु हो गया।

मालिक मकान को जब इल्म हुआ कि उसका किरायेदार पूरे देश का प्रधानमंत्री रह चुका है तो वह नन्दा जी के पास आया। और पैर पकड़ लिया, उसने कहा उसे बिल्कुल मालूम नहीं था कि उसका किरायेदार देश का भूतपूर्व प्रधानमंत्री है, जब तक वह जीवित रहे उस मकान में रहे और मरते दम तक पाँच सौ रूपये में गुज़ारा करते रहे, इस तरह पता चला कि वह आश्चर्यजनक चरित्र के इन्सान थे, सियाल कोट में जूलाई 1898 ई0 में पैदा हुए और जनवरी 1998 ई0 में अहमदाबाद में दुनिया से सिधार गये, उनके निधन की ख़बर भी शायद समाचार पत्र में नहीं आई, एफ0सी0 कालेज लाहौर से उन्होंने अर्थशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की और बाद में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर बन गये मुम्बई और अहमदाबाद की यूनिवर्सिटियों में भी प्रोफ़ेसर रहे जब राजनीति में आये, तो यूनियन मंत्री, विदेश मंत्री, डिप्टी चेयरमैन, प्लानिंग कमिश्नर भी रहे, कई बार लोक सभा के सदस्य निर्वाचित हुए, उनका रहन सहन बहुत सादा था, वह एक शरीफ़ सिद्धान्तवादी इन्सान थे 99 साल की उम्र में वह दुनिया से गये लेकिन उनके पास किसी प्रकार की जायदाद नहीं थी, बैंक बैलेन्स और अपना कोई निजी घर नहीं था। बस एक मान और सम्मान का वह ख़ज़ाना थो जो अमीर से अमीर लोगों के पास भी नहीं होता, यह भी हक़ीक़त है कि आज हिन्दुस्तानी सियासत में हद दर्जे भ्रष्टाचार है, लेकिन इसके बावजूद हमें बारहा गुलज़ारी लाल नन्दा जैसे चरित्र मिल जाते हैं।

हमारे देश में कई ऐसे उच्च स्तर के मन्सबदार मौजूद हैं जिनके असासे कुछ भी नहीं हैं। रफ़ी अहमद क़िदवाई, लाल बहादुर शास्त्री, भूतपूर्व राष्ट्रपति ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम। हमारे वर्तमान काल के सियासतदानों को ऐसे माननीय लोगों से सीखना चाहिए और अपना जायज़ा लेना चाहिए।

❖❖❖

चाँद का दो भागों में बँट जाना

इं0 जावेद इक़बाल

मक्का नगर के विरोधियों ने यहूदी आलिमों (धार्मिक विद्वानों) से पूछा कि हम मुहम्मद से उनके नबी होने का ऐसा कौन सा प्रमाण मांगे जो वह न दे सकें। यहूदी आलिमों ने कहा ''जादू का प्रभाव ज़मीन तक सीमित है, अतः तुम उनसे कहो कि अगर वह ख़ुदा के सच्चे नबी हैं और जादूगर नहीं हैं तो चाँद के दो टुकड़े कर दिखायें''।

अतः एक रात जब हज़रत मुहम्मद सल्ल0 मक्का नगर के बाहर मिना के मैदान में लोगों को खुदा का पैग़ाम सुना कर सच्चे धर्म की ओर बुला रहे थे। उस समय हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, जुबैर बिन मुतइम नौफ़ली, हज़रत हुज़ैफ़ा आदि भी आप सल्ल0 के साथ थे। चौदहवीं रात का चाँद मिना की पहाड़ियों के ऊपर चमक रहा था।

उसी समय मक्का नगर का कट्टर विरोधी अबू जहल अपने कुछ साथियों के साथ वहां आया और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से व्यंगात्मक स्वर में बोला– अच्छा तो अब तुम छुपछुप कर लोगों को अपने दीन की बातें बताते हो, कुछ हमें भी तो बताया करो। मुहम्मद सल्ल0 ने उसके व्यंग को नज़र अन्दाज़ करते हुए कहा– ''तुम मेरी बातें सुनते ही कब हो''। दूसरा बोला– तुम पहले अपने नबी होने का कोई प्रमाण दो, तब हम तुम्हारी बात सुनेंगे। अबू जहल फ़ौरन बोला– मुहम्मद तुम कहते हो कि जब हम मर जायेंगे तो तुम्हारा खुदा हमें दोबारा उठायेगा। यदि तुम सच्चे हो तो अपने अल्लाह से कहो आकाश में चमकते हुए इस चाँद को दो टुकड़े कर दे। यदि ऐसा हो गया तो हम तुम्हें सच्चा नबी मान लेंगे, तुम्हारे दीन पर ईमान ले आयेंगे।

यह सुन कर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने अल्लाह तआला से दुआ की और चाँद की ओर ग़ौर से देखा। उसी समय चाँद दो भागों में बँट गया। एक भाग पहाड़ी के एक ओर तथा दूसरा दूसरी ओर तैरता हुआ चला गया, और फिर तैरते हुए दोनों आ कर मिल गये। कुर्आन पाक में सूरह ''क़मर'' की पहली तीन आयतों में इस घटना का बयान है। यह देख कर अबू जहल बोला मुहम्म तुम बेशक बड़े जादूगर हो, तुमने हम पर ऐसा जादू किया कि हमारी आँखें धोखा खा गईं।

अबू जहल के साथियों ने कहा– मुहम्मद हम पर तो जादू कर सकते हैं मगर मक्का नगर के बाहर गये हुए लोगों पर नहीं कर सकते, उन्हें लौट कर आने दो, उनसे पूछेंगे। अतः जब बाहर गये हुए लोग मक्का वापस आये तो उन्होंने इस आश्चर्य चकित कर देने वाली घटना का ज़िक्र किया। जिसे उन्होंने सफ़र के दौरान स्वयं देखा था, मगर मक्का के कट्टर विरोधी जो क़ाफ़िर बने रहने की मानो क़सम खाये बैठे थे फिर भी न माने और इस घटना को जादू ही कहते रहे।

व्याख्याः— चाँद के दो भागों में बंट जाने की यह घटना हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को नबूवत मिलने के लगभग 9 वर्ष बाद की है। उस समय हज़रत को मक्का नगर में आम तौर से लोगों को अल्लाह का पैग़ाम सुनाने की इजाज़त नहीं थी। आप सल्ल0 अकसर रातों को नगर के बाहर निकल जाते और बाहर से आने वाले मुसाफिरों को अल्लाह का पैग़ाम सुनाते।

केरल प्रदेश में मालाबार कैदनगल्लूर का राजा चैरामन पैरूमल अपने महल के ऊपरी माले पर टहल रहा था। टहलते–टहलते उसकी नज़र चाँद के दो भागों पर पड़ी जो दायें–बायें को जा रहे थे, राजा भौचक्का हो कर देखने लगा तभी उसने देखा कि कुछ दूर जा कर दोनों भाग पुनः पलटे और आकर फिर मिल गये। दूसरे दिन राजा पैरूमल ने दरबार किया जिसमें राज्य के विद्वानों को विशेषकर बुलाया। उसने सबके सामने रात वाली घटना सुनाई और इस विषय पर प्रकाश डालने को कहा। कुछ विद्वानों ने भारतीय धर्म ग्रन्थों में बयान हुई भविष्यवाणी के आधार पर बताया कि अरब देश में प्रभु का सन्देश सुनायेगा, उसी के द्वारा यह चमत्कार दिखाया जायेगा।

भारतीय इतिहास के वर्तमान काल में पुस्तकों में यह घटना संक्षिप्त रूप में मिलती तो है मगर इसे विशेष महत्व नहीं दिया गया है। पंडित राजेन्द्र श्री ने भी अपनी पुस्तक ''भारत में मूर्ति पूजा'' में इस घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि यह राजा इस घटना के बाद मुसलमान हो गया था।

शेख़ जैनुद्दीन अल मख़दूमी की पुस्तक ''तोहफ़तुल मुजाहिदीन'' में इसका पूर्ण विवरण मौजूद है, मद्रास में एक हाथ से लिखी संस्कृत की किताब में भी यह घटना जूं की तूं मौजूद है। जिसके अनुसार राजा पैरुमल ने अरब देश की ओर से अपने समुद्री तट पर आने वाले व्यापारियों से सम्पर्क स्थापित करके इस घटना की, और इसे दिखाने वाले व्यक्ति की जानकारी प्राप्त की। उन दिनों अरब की ओर से आने वाले ये व्यापारी यहूदी व ईसाई हुआ करते थे। राजा उनसे धर्म के विषय में वार्तालाप करता रहता था। इस अवसर पर जब उसने इस घटना और उस व्यक्ति के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि मक्का नगर में एक व्यक्ति ने खुदा का आख़री रसूल होने का दावा किया है वह खुदा की बातें लोगों को सुनाता है। अपने दावों की पुष्टि सिद्ध करने के लिए उसने यह चमत्कार करके दिखाया है मक्का नगरवासी उसे जादूगर भी कहते हैं।

यह बातें सुन कर राजा के मन में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से मिलने की इच्छा हुई और अपने राज्य की उचित व्यवस्था करके वह हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से मिलने मदीना गया। एक अरब विद्वान ताबूर ने अपनी पुस्तक ''फिरदौसुल हिकमः'' में लिखा है कि राजा जिसका इस्लामी नाम ''ताजुद्दीन'' रखा गया था हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के साथ 17 दिन रहा था।

यह भारत के लिए बड़े गौरव की बात है कि उसे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि एक राजा ने अपने देश का प्रतिनिधित्व दरबारे रिसालत में किया।

❖❖❖

कुर्आन की अज़मत और हमारी गफ़लत

शगुफता ज़ाकिर

आज के मौजूदा दौर में साइन्स ने बहुत तरक़्क़ी कर ली है, लेकिन जो तहकीक़ साइन्स ने आज के दौर में बड़ी मशीनों के ज़रिये की है वह आश्चर्यजनक है, दुनिया ने कम वक़्त में तेज़ रफ़्तारी से तरक़्क़ी की।

कुर्आन मौजूदा दुनिया की साइन्सी तरक़्क़ियों का मुख़ालिफ़ और विरोधी नहीं बल्कि इन्सान को अल्लाह की बनाई हुई चीज़ों में ग़ौर व फिक्र की दअ़वत देता है। आज नये–नये आविष्कार से आलमे आख़िरत को समझना आसान हो रहा है। यही वजह है कि आज बहुत से ग़ैर–मुस्लिम साइन्सदां कुर्आन की आयतों को तस्लीम कर रहे हैं और उस पर ईमान ला रहे हैं।

लेकिन बहुत अफ़सोस की बात है कि आज का हमारा मुसलमान कुर्आन की अज़मतों को भुला बैठा है, उसके घरों में कुर्आन सिर्फ अलमारी की ज़ीनत बन कर रह गया है। कुर्आन की अज़मत बयान करते हुए अल्लाह ने फ़रमाया है– ***''अगर हम इस कुर्आन को किसी पहाड़ पर नाज़िल करते तो तुम देखते कि ये अल्लाह के ख़ौफ से झुक कर फट जाता और हम ये मिसालें लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वो गौर करें, वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, सब छुपी और खुली बातों का जानने वाला है।''***

(सूरः हश्रः21–22)

आज हमारे दिल पहाड़ से भी ज़्यादा सख़्त हो गये हैं दिल में ज़र्रा बराबर का भी ख़ौफ़ नहीं रह गया है। कुर्आन में एक और जगह अल्लाह ने फरमाया है– ***फिर उसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गये गोया बड़े पत्थर हैं या उससे भी ज़ियादा सख़्त, और पत्थर तो बाज़ ऐसे होते हैं कि उनमें से चश्मे फूट पड़ते हैं और बाज़ ऐसे होते हैं कि फट जाते हैं और उनमें से पानी निकलने लगता है और बाज़ ऐसे होते हैं कि अल्लाह के ख़ौफ से गिर पड़ते हैं और अल्लाह तुम्हारे सब कामों से बाखबर है। (2:74)***

इन आयतों पर ग़ौर करें तो एहसास होगा कि हमारा दिल पत्थर का भी नहीं है बल्कि मुर्दा हो चुका है। सय्यदुना वहब बिन मुनब्बह रज़ि0 फ़रमाते हैं कि– ''मुझे ताज्जुब है उन लोगों पर जो उस शख्स पर तो रोते हैं जिसका जिस्म मुर्दा हो चुका है लेकिन उस पर नहीं रोते जिसका दिल मुर्दा हो चुका है हालांकि दिल का मुर्दा होना जिस्म के मुर्दा होने से बहुत बड़ा हादसा है।''

नबी सल्ल0 ने फ़रमाया जिसका मफहूम है कि जिस दिल में कुर्आन नहीं वो सीना वीरान मकान की मानिंद है। आज हम सब का दिल वीरान मकान की तरह हो चुका है।

सोचने वाली बात है कि जब अल्लाह ने कोई चीज़ बेमकसद पैदा नहीं की तो इन्सान जिसे अल्लाह ने सब मखलूक़ में अशरफुल मख़लूक़ात बनाया उसे कैसे बेमकसद पैदा कर सकता है। मगर अफ़सोस कि हम अपनी अपनी दुनियावी मसरूफ़ियात में अपने असल मक़सद को भुला बैठे हैं।

कुर्आन अल्लाह का कलाम है जिसे अल्लाह ने हमारी हिदायत और रहनुमाई के लिए भेजा है जिससे हम ज़िन्दगी

गुज़ारने का तरीक़ा और सही और ग़लत में फर्क़ समझ सकें। अल्लाह ने कुर्आन में इरशाद फरमाया– ज़िन्दगी गुज़ारने के सारे तरीक़े बता दिये। शैतान के फ़ित्नों और चालों से भी आगाह कर दिया हमारे सारे मसलों के हल बता दिये अब ये हमारी ग़लती है कि हमने कभी कुर्आन नहीं पढ़ा तो समझा नहीं और समझा तो कभी अमल नहीं किया।

आज का मुसलमान परेशानियों में मुब्तला होता जा रहा है क्योंकि उसने खुद को दीन से बहुत दूर कर लिया है जब कि अल्लाह ने तकलीफ़ और परेशानियां भेजने से पहले ही हमारे पास उसका हल कुर्आन की शक्ल में भेज दिया, मगर हमने कभी इसको खोल कर ही नहीं देखा। अगर कुर्आन को समझ लेता तो इतना ग़मज़दा और परेशान न होता।

अल्लाह ने कुर्आन में तकलीफों और परेशानियों के मुताल्लिक़ कुछ आयात बयान की है–

''क्या लोग ये ख़्याल किये हुए हैं कि सिर्फ ये कहने से कि हम ईमान लाये, छोड़ दिये जायेंगे और इनकी आज़माईश नहीं की जायेगी। और जो लोग इनसे पहले हो चुके हैं हमने उनको भी आज़माया था और इनको भी आज़मायेंगे सो अल्लाह उनको ज़रूर मालूम करेगा जो अपने ईमान में सच्चे हैं और उनको भी जो झूठे हैं''। (29: 2–3)

हर शख्स को मौत का मज़ा चखना है और हम तुम लोगों को सख़्ती और आसूदगी में आज़माईश के तौर पर मुब्तला करते हैं और तुम हमारी तरफ़ ही लौट कर आओगे।'' (21:35)

''कोई मुसीबत ज़मीन में और खुद तुम पर नहीं पड़ती मगर पेशतर इसके कि हम उसको पैदा करें एक किताब में लिखी हुई होती है और ये काम अल्लाह को आसान है ताकि जो फायदा तुम्हें हासिल न हो उसका ग़म न खाया करो और जो तुमको उसने दिया हो उस पर इतराया न करो और अल्लाह किसी इतराने और शेखी बघारने वाले को दोस्त नहीं रखता।'' (57:22–23)

''और हमने तुम्हें एक दूसरे के लिए आज़माइश बनाया। क्या तुम लोग सब्र करोगे और तुम्हारा परवरदिगार तो देखने वाला है।''

(25:20)

''ऐ अहले ईमान तुम्हारे माल और जान में तुम्हारी आज़माईश ज़रूर की जायेगी और अहले किताब से और उन लोगों से जो मुश्रिक हैं बहुत सी ईज़ा की बातें सुनोगे तो अगर सब्र और परहेज़गारी करते रहोगे तो ये बड़ी हिम्मत के काम हैं।'' (3:186)

''और जो मुसीबत तुम पर वाके होती है वो तुम्हारे अपने करतूतों से और वो बहुत से गुनाह तो माफ कर देता है। और तुम अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार।''

(42: 31–32)

''क्या तुम ये ख़्याल करते हो कि यूं ही बहिश्त में दाखिल हो जाओगे और अभी तुमको पहले लोगों जैसी मुश्किलें पेश आयी ही नहीं। उनको बड़ी– बड़ी सख़्तियाँ और तकलीफें पहुँचीं और ज़लज़लों में इस कदर झिंझोड़े गये यहाँ तक की पैगम्बर और मोमिन जो उनके साथ थे सब पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आयेगी। देखो अल्लाह की मदद अनकरीब है। अल्लाह किसी शख़्स को उसकी ताक़त से ज़्यादा का ज़िम्मेदार नहीं बनाता। जो अच्छा काम

करेगा तो उसको उसका फ़ायदा मिलेगा और जो बुरे काम करेगा तो उसे उसका नुक़सान पहुँचेगा।''

(2: 214,286)

''सो तुम मुझे याद किया करो मैं तुम्हें याद करूँगा।'' (2:152)

''बेशक हर मुश्किल के साथ आसानी है।'' (94:6)

''क्या ये देखते नहीं हैं कि ये साल में एक या दो बार मुसीबत में फंसा दिये जाते हैं फिर भी तौबा नहीं करते और न नसीहत हासिल करते हैं।''

(9:126)

इन आयतों को पूरे यकीन के साथ पढ़ने पर दिल में सब्र और इत्मीनान आता है कि अल्लाह ने हमें किसी मसलहत के तहत परेशानियों और तकलीफ़ों में मुब्तला किया है और इनसे नजात दिलाने वाला भी अल्लाह ही है। लेकिन अफ़सोस कि हमें अल्लाह की बनाई मखलूक़ पर जितना भरोसा है उतना भी भरोसा हमें अल्लाह पर नहीं है। शायद भरोसा इसलिए भी नहीं है क्योंकि हमें पता ही नहीं है कि हमें, अल्लाह ने कुर्आन में कहा क्या है। हमारे किसी बहुत खास का मैसेज आ जाये तो हम उसे पूरी तवज्जो के साथ इत्मीनान से पढ़ते हैं लेकिन अल्लाह ने हमें कुर्आन में क्या मैसेज दिया है वो हम नहीं जानते। कुर्आन को हम बस जल्दी–जल्दी बिना किसी तवज्जो के पढ़ कर अलमारियों में वापस रख देते हैं। जबकि अल्लाह ने कुर्आन को ठहर–ठहर कर पूरी तवज्जो के साथ समझ कर पढ़ने का हुक्म दिया है।

नबी सल्ल0 ने क़यामत की निशानियाँ बताते हुए कहा था कि क़यामत आने से पहले कुर्आन उठा लिया जायेगा। क्या हमने कभी इस बात पर गौर किया है कि कुर्आन उठा लेने का क्या मतलब है? कुर्आन हमारे नबी के कल्ब मुबारक पर नाजिल हुआ था और आज ये हमारे दिलों से धीरे–धीरे उठाया जा रहा है लेकिन हम दुनियावी ज़िन्दगी में इस क़दर गाफ़िल हो चुके हैं कि हमें इसका एहसास तक नहीं हो रहा है। और हम आज भी इसी गफ़लत में हैं कि जब कुर्आन के पन्ने कोरे हो जायेंगे तब वो क़यामत की निशानी होगी।

आज के दौर में मीडिया और कुछ कट्टरपंथी कुर्आन की आयतों को तोड़ मरोड़ कर उसे ग़लत तरीके से लोगों के सामने पेश कर रहे हैं जिससे गैर मुस्लिम और कुछ मुसलमान भी इससे गुमराह हो रहे हैं। बहुत अफ़सोस की बात है कि हम दुनियावी मसलों पर तो इतनी मालूमात रखते हैं कि सारी दुनिया की ख़बर होती है लेकिन कुर्आन की इतनी भी मालूमात नहीं है कि अगर कोई कुर्आन की आयतों को ग़लत तरीके से बता कर हमारे खिलाफ लोगों को गुमराह करे तो हम उसकी ग़लतफहमी को दूर कर सकें।

ये हम सबकी ज़िम्मेदारी है कि हम कुर्आन को अरबी ज़बान में पढ़ने के साथ इसे अपनी ज़बान में समझें और इसकी आयतों पर गौर व फिक्र करें।

अगर हम इस कुर्आन को मजबूती से थाम लें तो ये हमारी ज़िन्दगी में भी रहनुमाई करेगा और आख़िरत में भी हमारी सिफ़ारिश का ज़रिया बनेगा। अल्लाह का शुक्र है कि अल्लाह ने हमें इस नेमत से नवाज़ा है। अल्लाह हमें इसकी सही मानों में क़द्र करने इसको पढ़ने और समझने और इसके मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफीक़ अता फरमाये। आमीन।

❖❖❖

वह मुअ़ज़्ज़ज़ थे ज़माने में मुसलमाँ हो कर
और हम ख्वार हुए तारिके कुरआँ हो कर

तेतरा बना लेखक

हरि प्रसाद राय

आनंदी देवी पाक कला में निपुण थीं। वह रूप और सौंदर्य की भी धनी थीं। वह किसी को दुखी नहीं करती थीं। उनके पति डाक तार विभाग में कार्यरत थे। उन दिनों एक गृहस्थ महिला के सुखमय जीवन के लिए इससे अधिक और कुछ नहीं चाहिए था, फिर भी वह सुखी नहीं थीं। उनके दुख का कारण एक–एक करके दो बेटियों का गुज़र जाना था। ऊपर से गांव की महिलाओं का यह कहना कि उनके मायके (करौना गाँव) में भूत हैं जो उनके बच्चों को जीने नहीं देते। उन्होंने किसी को जवाब नहीं दिया और तीसरी बेटी को ससुराल में ही जन्म दिया, जिसे स्वस्थ जीवन मिला।

आनंदी देवी का जीवन थोड़े समय के लिए सुखमय रहा, पर यह सुख अल्पकालिक रहा। चौथी संतान के गर्भ में आते ही गाँव की वही महिलाएं फिर उनसे कहने लगीं, 'तेतरा कहैं बहेतरा से तूं खा माई के, हम खाईं बाबू के।' तेतरा का मतलब तीन लड़कियों के बाद पैदा होने वाला लड़का, और बहेतरा का मतलब चार लड़कियों के बाद का लड़का। आनंदी देवी ने तेतरा के रूप में आने वाली संतान को भी सकुशल जन्म दिया। यह संतान स्वस्थ रही। माता–पिता को भी कुछ नहीं हुआ। आगे चल कर यह तेतरा एक बड़ा लेखक बना।

इसने न केवल अपनी रचनाओं से रूढ़िवादिता, जड़ता और अंधविश्वासों के खिलाफ लड़ाई लड़ी बल्कि व्यवहारिक जीवन में भी इनकी मुखालफत की। विधवा लड़की से शादी की। बेटी की शादी बिना दहेज के की। उसे दान की वस्तु नहीं माना और कन्यादान करने से इंकार किया। पाखण्ड पर लिखने के कारण उसे लखनऊ के ब्राह्मणों के विरोध का सामना करना पड़ा। लेकिन भूत और तेतरा की पीड़ा से गुज़रने वाली माँ अपने बेटे को पाखण्ड और अंधविश्वास के खिलाफ़ लड़ते नहीं देख सकीं। आठ साल के बालक को छोड़ कर वह इस दुनिया से हमेशा के लिए चली गईं। यही बालक आगे चल कर मुशी प्रेमचंद्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

(एन0बी0टी0 डेस्क के शुक्रिये के साथ)

❖❖❖

वजन कम करने के लिए खाएं ब्रोकली

डॉ0 पूनम तिवारी, डायटिशन, आरएमएलआई

हरी सब्जियाँ सेहत के लिए वरदान मानी जाती हैं। हरी सब्जियों में पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व पाये जाते हैं, जो शरीर को अंदर से मज़बूत बनाने का काम करते हैं। आँखों की रोशनी बढ़ाने, कद बढ़ाने, चेहरे को ग्लोइंग बनाने और बालों को मजबूत करने के लिए कई तरह की हरी सब्जियाँ खाने की सलाह दी जाती है। इन्हीं हरी सब्जियों में से एक है ब्रोकली। ब्रोकली सेहत के लिए तो फायदेमंद है ही, साथ ही वजन को नियंत्रित रखने में भी मदद करती है। जो लोग वजन और मोटापा कम करने की प्लानिंग कर रहे हैं, वो नियमित तौर पर ब्रोकली का सेवन कर सकते हैं।

ब्रोकली में कैल्शियम, आयरन, जिंक, फाइबर, प्रोटीन, सेलेनियम, विटामिन–ए जैसे कई पोषक तत्व पाये जाते हैं। ये सभी पोषक तत्व शरीर को बीमारियों से बचाने और लंबे समय तक स्वस्थ रखने में मददगार साबित होते हैं। ब्रोकली को आप सब्जी, सलाद, सूप, सैंडविच, पिज्जा, बर्गर में ऐड करके अपनी डाइट का हिस्सा बना सकते हैं। ब्रोकली में मौजूद फाइबर और पोटेशियम के गुण वजन को कम करने में मदद कर सकते हैं। ब्रोकली में पाया जाने वाला फाइबर पेट को लम्बे समय तक भरा हुआ महसूस करवाता है, जिससे आप एक्स्ट्रा खाने या जंक फूड खाने से बच जाते हैं। साथ ही वजन कंट्रोल करने में मदद मिलती है। ब्रोकली में विटामिन और एंटी –ऑक्सिडेंट के गुण होते हैं, जो आप के वजन को कम करने में मदद करते हैं। आप इसे सलाद के तौर पर भी खा सकते हैं

❖❖❖

कैसे करें ब्रोकली का सेवन

वजन घटाने के लिए आप सलाद, सूप और अन्य सब्जियों के साथ ब्रोकली का सेवन कर सकते हैं। वजन घटाने के लिए ब्रोकली का सेवन करते वक्त ध्यान दें कि इसे ज़्यादा तेल और मसालों में न पकाएं। ब्रोकली को ज़्यादा पकाने से इसके पोषक तत्व कम हो जाते हैं, जो शरीर का वजन घटाने के बजाय बढ़ा सकते हैं। ब्रोकली को स्टीम या उबाल कर ही खाएं। आप ब्रोकली को सुबह के नाश्ते, लंच और डिनर में आसानी से शामिल कर सकते हैं। कुछ लोग ब्रोकली का जूस या ब्रोकली कॉफी भी पीते हैं। अगर आप ब्रोकली का जूस या ब्रोकली कॉफी पी रहे हैं तो इसे नाश्ते या लंच में ही लें। रात के समय ब्रोकली कॉफी या जूस का प्रयोग न करें।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू मोहम्मद आमिर नदवी

धरती पर चाँद उतारने की तैयारी में UAE :–

दुबईः संयुक्त अरब अमीरात अपनी गगनचुम्बी और खूबसूरत इमारतों के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। इसी में से एक है बुर्ज खलीफ़ा, जिसे देखेन के लिए पूरी दुनिया से लोग दुबई आते हैं। लेकिन, अब इस शहर की खूबसूरती को और ज़्यादा बढ़ाने के लिए यूएई ने आसमान से चाँद को धरती पर उतारने का फैसला किया है। इसके लिए पैसा पानी की तरह बहाने का प्लान भी तैयार किया जा चुका हे। दरअसल, दुबई में एक विशाल मून रिसॉर्ट बनाने की तैयारी चल रही है। इसके लिए सबसे पहले चंद्रमा के जैसे नज़र आने वाली एक बिल्डिंग का निर्माण किया जाएगा। बाद में इसे एक रिसॉर्ट की शकल दिया जाएगा। इस रिसॉर्ट को बनाने में 4.2 बिलियन पाउण्ड (लगभग 38 हज़ार करोड़ रूपये) का खर्च आने की सम्भावना है। इस विचित्र और बेहद मंहगे प्रोजेक्ट का काम जल्द ही शुरु किया जा सकता है।

एलिजाबेथ के ज़िन्दा रहते ही राजा बनने का अभ्यास कर रहे थे चार्ल्सः–

लंदनः ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री डेविड कैमरन ने रविवार को खुलासा किया कि महाराज चार्ल्स तृतीत ने महाराज और राष्ट्र प्रमुख बनने का अभ्यास किया था। कैमरन 2010 और 2016 के बीच ब्रिटेन के प्रधानमंत्री थे। उन्होंने खुलासा किया कि 10 डाउनिंग स्ट्रीट में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने तत्कालीन प्रिंस ऑफ वेल्स (चार्ल्स) के साथ बैठक की थी, ताकि वह अपनी पदोन्नति की तैयारी कर सकें। महारानी एलिजाबेथ द्वतीय के निधन के बाद नये संप्रभु के रूप में 73 वर्षीय महाराज चार्ल्स तृतीय अपने नियमित कार्यक्रमों के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में प्रधानमंत्री के साथ साप्ताहिक बैठकें करेंगे। कैमरन ने बीबीसी को दिये एक साक्षात्कार में कहा, ''जब महारानी एलिजाबेथ द्वतीय सिंहासन पर काबिज थीं, तब प्रिंस चार्ल्स के साथ मैंने बैठकें कीं, क्योंकि वह इस बारे में सोचना शुरु करना चाहते थे कि उन बैठकों को कैसे संचालित किया जाए।

दुनिया का सबसे प्राचीन वृक्षः–

सैंटियागोः दक्षिणी अमेरिकी देश चिली में एक सुनसान घाटी में एक प्राचीन पेड़ मौजूद है। इस विशालकाय पेड़ को जब आप देखेंगे तो ऐसा लगेगा जैसे इसने आसमान को छतरी बना रखा है। ये दुनिया का सबसे पुराना पेड़ हो सकता है। एक नये कम्प्यूटर मॉडल से पता चला है कि ''ग्रैन अबुएलो'' नाम का ये पेड़ लगभग 5400 साल पुराना हो सकता है। अगर इसकी तारीख की पुष्टि हो जाती है तो ग्रैन अबुएलो इस समय सबसे पुराने पेड़ का आधिकारिक रिकार्ड रखने वाले कैलिफोर्निया के ब्रिसलकोन पाइन से 600 साल पुराना होगा।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25/12/2021 تاریخ

स्टॉफ़ क्वाटर्स की तामीर के लिए अपील

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, दारुल उलूम और उसकी ब्रांचों में इल्मी तालीमी सिलसिला बराबर जारी है, टीचर्स व स्टॉफ अपनी ज़िम्मेदारियों को अंजाम दे रहे हैं, टीचर्स व स्टॉफ की अधिकता की वजह से दारुलउलूम में उनके रहने की गुंजाइश नहीं रही तो दारुलउलूम के मेन कैम्पस के अलावा माहद सिकरौरी में स्टॉफ क्वाटर्स और माहद के करीब नदवा कालोनी की तीन मंज़िला बिल्ड़िंग तामीर हुई, मगर अब भी स्टॉफ के लिए क्वाटर्स की कमी बहुत ज़ियादा महसूस की जा रही है, इस सूरते हाल की वजह से नदवा मेन कैम्पस से करीब मुहल्ला मकारिम नगर में कुछ और स्टॉफ क्वाटर्स बनाने का फैसला किया गया है, और अल्लाह तआ़ला की मदद के भरोसे पर यह तामीर शुरु कर दी गयी है।

नये स्टॉफ क्वाटर्स की यह बिल्डिंग तीन मंजिला होगी, जिसमें 9 फेमली क्वाटर्स होंगे, इसकी तामीर पर 1,15,00000/- (एक करोड़ पंद्रह लाख) रूपये के खर्च का अंदाज़ा है, जो इंशाअल्लाह अहले खैर हज़रात के सहयोग से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम ज़रूरत की ओर फौरन तवज्जोह फरमायेंगे और नदवतुल उलमा के कारकुनों का हाथ बटायेंगे।

हमें अल्लाह तआला की ज़ात पर पूरा भरोसा है कि उसकी मदद से यह काम मुकम्मल होगा।

मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा-ए-करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **8736833376** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
STATE BANK OF INDIA MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
-:तअ़मीर:-
A/C No. 10863759733

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/8795
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2021 To 2023
Dispatch Date : 1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC & RESEARCH CENTRE

Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983